Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 48

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

30 रबीउल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 28 नबुव्वत 1398 हिजरी शमसी 28 नवम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

नफ़्स अम्मारा की हालत में इन्सान शैतान का ग़ुलाम होता है और लव्वामा में उसे शैतान से एक मुजाहिदा और जंग करनी होती है।

मगर मुतमइन्नह की हालत एक अमन और आराम की हालत होती है कि वह आराम से बैठ जाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दुनिया में कोई चीज़ लाभ से ख़ाली नहीं

यह बात भी ख़ूब याद रखनी चाहिए कि हर बात में मुनाफ़ा होता है। दुनिया में देख लो। उच्च स्तर के पेड़ों से लेकर कीड़ों और चूहों तक भी कोई चीज़ ऐसी नहीं जो इन्सान के लिए लाभ और फ़ायदा से ख़ाली हो। ये सारी वस्तुऐं चाहे वे ज़मीन की हैं या आसमानी अल्लाह तआला की सिफ़तों के प्रतिबिम्ब और निशान हैं और जब सिफ़तों में लाभ ही लाभ है तो बतलाओ कि ज़ात मैं किस क़दर लाभ और सूद होगा। इस मुक़ाम पर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जैसे इन वस्तुओं से हम किसी वक़्त नुक़्सान उठाते हैं तो अपनी ग़लती और अज्ञानता की वजह से। इसलिए नहीं कि इन वस्तुओं में इन चीज़ों में हानि ही है। नहीं बल्कि अपनी ग़लती और भूल से। इसी तरह पर हम अल्लाह तआला के कुछ गुणों का इलम ना रखने की वजह से कष्ट और मसीबतों में पीड़ित होते हैं। वर्ना ख़ुदा तआला तो साक्षात रहम और करम है। दुनिया में तकलीफ़ उठाने और दु:ख पाने का यही राज़ है कि हम अपने हाथों अपनी भूल और क़सूर इलम की वजह से मसीबतों में पीड़ित होते हैं। अत: इस सिफ़ाती आँख की ही खिड़कियों से हम अल्लाह तआला को रहीम और करीम और हद से ज़्यादा सोच से बाहर लाभ देने वाली हस्ती पाते हैं और इन मुनाफ़ा से ज़्यादा लाभान्वित वही होता है जो उस के ज़्यादा क़रीब और नज़दीक होता जाता है और यह स्तर उन लोगों को ही मिलता है जो मुत्तक़ी कहलाते हैं और अल्लाह तआला के क़ुरब में जगह पाते हैं। जैसे जैसे मुत्तक़ी ख़ुदा तआला के क़रीब होता जाता है एक नूर हिदायत उसे मिलता है जो उस की मालूमात और अक़ल में एक ख़ास किस्म की रोशनी पैदा करता है और जैसे जैसे दूर होता जाता है एक तबाह करने वाला अन्धेरा उस के दिल तथा दिमाग़ पर क़ब्ज़ा कर लेती है। यहां तक कि صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अल-बक़र:19) का मिस्दाक़ हो कर आपमान और तबाही का वारिस बन जाता है मगर उस के मुक़ाबला में नूर और रोशनी से लाभान्वित इन्सान उच्च स्तर की राहत और इज़्ज़त पाता है अत: ख़ुदा तआला ने ख़ुद फ़रमाया है।

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً

(अल-फ़जर:28,29) अर्थात हे वे नफ़्स जो सन्तोष प्रापत है और फिर यह सन्तोष ख़ुदा के साथ पाया है। कुछ लोग हुकूमत से बज़ाहिर इतमीनान और सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं। कुछ की तसकीन और सन्तुष्टि का कारण उनका माल और इज़्ज़त हो जाती है। और कुछ अपनी ख़ूबसूरत और होशयार औलाद तथा लोगों को देख देखकर बज़ाहिर सन्तुष्ट कहलाते हैं मगर ये लज़्ज़त और विभिन्न प्रकार दुनिया के आन्नद इन्सान को सच्चा सन्तोष और सच्ची तसल्ली नहीं दे सकतीं बल्कि एक किस्म की नापाक लालच को पैदा कर के तृष्णा और प्यास को पैदा करती हैं। प्यास के मरीज़ की तरह उनकी प्यास नहीं बुझती। यहां तक कि उनको हलाक कर देती है मगर यहां ख़ुदाए तआला फ़रमाता है वह नफ़्स जिसने अपना इतमीनान ख़ुदा तआला में हासिल किया है। यह स्तर बंदे के लिए मुम्किन है इस वक़्त उस की ख़ुशहाली बावजूद माल तथा दौलत के दुनियाव के सम्मान और जलाल के होते हुए भी ख़ुदा ही में होती है। यह दौलत जवाहर , ये दुनिया और इस के धंदे उस की सच्ची राहत का कारण नहीं होते। अत: जब तक इन्सान ख़ुदा तआला ही में राहत और इतमीनान नहीं पाता वह नजात नहीं पा सकता क्योंकि नजात इतमीनान ही का एक समानार्थक शब्द है।

नफ़्स मुतमइन्नह के बिना इन्सान नजात नहीं पा सकता

मैंने कुछ आदमियों को देखा और प्राय के हालात पढ़े हैं जो दुनिया में माल दौलत और दुनिया की झूटी लज़्ज़तें और हर एक किस्म की नेअमतें औलाद लोगो रखते थे। जब मरने लगे और उनको इस दुनिया के छोड़ जाने और साथ ही इन चीज़ों से अलग होने और दूसरे संसार में जाने का इलम हुआ तो उन पर हसरतों और व्यर्थ आरज़ूओं की आग भड़की और ठण्डी आहें मारने लगे। अत: ये भी एक किस्म का जहन्नुम है जो इन्सान के दिल को राहत और क़रार नहीं दे सकता बल्कि उस को घबराहट और बेक़रारी की अवस्था में डाल देता है। इसलिए यह बात भी मेरे दोस्तों की नज़र से छुपी नहीं रहना चाहिए कि प्राय समय इन्सान घर वालों और माल की मुहब्बत हाँ नाजायज़ और व्यर्थ मुहब्बत में ऐसा लीन हो जाता है और अक्सर समय इसी मुहब्बत के जोश और नशा में ऐसे नाजायज़ काम कर गुज़रता है जो इस में और ख़ुदा तआला में एक पर्दा पैदा कर देते हैं और इस के लिए एक दोज़ख़ तैयार कर देते हैं। इस को इस बात का इल्म नहीं होता जब वे इन सबसे अचानक अलग किया जाता है। उस घड़ी की उसे ख़बर नहीं होती। तब वह एक सख़्त बेचैनी में पीड़ित हो जाता है। ये बात बड़ी आसानी से समझ में आ सकती है कि किसी चीज़ से जब मुहब्बत हो तो इस से जुदाई और अलैहदगी पर एक दुख और दर्द पैदा करने वाला ग़म पैदा हो जाता है। यह मसला अब पुस्तकों में वर्णित ही नहीं बल्कि अक्ल का रंग भी रखती है जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۔ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ (अल हमज़:7,8) अत: यह वही अल्लाह के ग़ैर की मुहब्बत की आग है जो इन्सानी दिल को जला कर राख कर देती है और एक हैरत वाो अज़ाब और दर्द में पीड़ित कर देती है। मैं फिर कहता हूँ कि यह बिलकुल सच्ची और यक़ीनी बात है कि नफ़्स मुतमइन्नह के बिना इन्सान नजात नहीं पा सकता।

जैसा कि हमने पहले बयान किया है नफ़्स अम्मारा की हालत में इन्सान शैतान का ग़ुलाम होता है और लव्वामा में उसे शैतान से एक मुजाहिदा और जंग करनी होती है। कभी वह विजयी हो जाता है और कभी शैतान मगर मुतमइन्नह की हालत एक अमन और आराम की हालत होती है कि वह आराम से बैठ जाता है। इसलिए इस आयत में कि يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ (अल-फ़जर:28) यह स्पष्ट मालूम होता

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-17)

आपके प्रोग्रामों में खेलों इत्यादि पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है, इज्तिमा के अवसर पर सत्तर से इसी प्रतिशत प्रोग्राम इल्मी होने चाहिऐं

जिन में जनरल नॉलिज , मज़हबी तथा धार्मिक उलूम,तिलावत क़ुरआन करीम का मुक़ाबला, अज़ान का मुक़ाबला और इस तरह कई अन्य सवाल तथा जवाब के प्रोग्राम हो सकते हैं।

मैं ने आपके सदर साहिब से कहा है कि वह पूरे साल के लिए कोई theme सोच कर बताएं,तीन विषय बताएं उनमें से जो theme भी फाईनल होगा इसी पर आप सब ने काम करना है, साल भर आपके प्रोग्राम इसी theme के अनुसार होने चाहिऐं और आपके नेशनल और रीजनल इज्तिमाओं के प्रोग्राम भी इसी themeके अनुसार हूँ ताकि साल बाद आपको इलम हो कि आप ने सारा साल क्या कुछ प्राप्त किया है कहाँ तक उस theme के मक़सद को प्राप्त करने की कोशिश की है।

मोतमिद की ज़िम्मेदारी है कि हर साल मुहतमिम अपना प्लान बना कर जमा करवाए और मुहतमीम जो भी पलान बनाए फिर यह प्लान मुझे मन्ज़ूरी के लिए भिजवाएंगे मैं उनमें किसी किस्म की कमी नहीं करूँगा लेकिन हो सकता है कुछ चीज़ों की वृद्धि कर दूं, इसलिए महतममीन जो भी प्लान बनाएँ शीघ्र इस पर अनुकरण भी शुरू कर दें। लेकिन इस के साथ साथ नियमित आज्ञा भी प्राप्त करें,फिर हर त्रि-मासिक रिपोर्ट में इस का ज़िक्र करें कि इस प्लान में से कितना काम हो चुका है।

सदर मजलिस का हर स्थानीय मजलिस के क़ायद के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क होना चाहिए , इसलिए अगर हर महीना नहीं तो कम से कम दो महीना में एक बार स्थानीय मज्लिसों की रिपोर्टों पर आप का तबसरा होना चाहिए।।

जहां कहीं भी जमाअत का प्रोग्राम और ज़ेली तन्ज़ीम के प्रोग्राम का आपस में clash हो तो वहां जमाअत के प्रोग्राम को प्राथमिकता मिलनी चाहिए ख़ुद्दामुल अहमिदया और अन्य ज़ैली तंज़ीमें जमाअत के प्रोग्रामों में सहयोग और मददगार होनी चाहिऐं।

ख़ुद्दाम को इस बात का एहसास दिलाना चाहिए कि वे कोई टैक्स इत्यादि नहीं अदा कर रहे बल्कि यह चन्दा उन की अपनी भलाई के लिए है।

नेशनल मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.ऐस.ए की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर की सुनहरी नसीहतें।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

04 नवम्बर 2018 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 40 मिनट पर मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। अमरीका में आज इतवार से Winter Time शुरू हुआ है और घड़ियाँ एक घंटा पीछे की गई हैं। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और हिदायतों से नवाज़ा।

सामूहिक मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार10 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ लाए और पाकिस्तान से अमरीका पहुंचने वाले लोगों और नौजवानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का प्रोग्राम शुरू हुआ। इन नौजवानों की संख्या 145 थी और यह अमरीका की विभिन्न जमाअतों से बड़े लमे सफ़र तय करके पहुंचे थे।

आज यह सब अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफतुल मसीह के दर्शन से फ़ैज़याब हो रहे थे। ये सभी वे लोग थे जो अपने ही देश में ज़ालिमाना क़ानून और अपने ही हम वतनों के ज़ुलम तथा सितम से सताए हुए थे और अपने घर-बार और प्रियों को छोड़कर, हिजरत करके इस देश में आ बसे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी प्रत्येक को हाथ मिलाने के शरफ़ से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर ने कुछ से पूछा कि पाकिस्तान से कहाँ से आए हैं। यह नौजवान भी हाथ मिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा से बात करने का सौभाग्य पाते। प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का भी सौभाग्य पाया।

ये सब लोग आज कितने ही ख़ुशनसीब थे कि उन्होंने अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में कुछ क्षण गुज़ारे। उनके ग़म और फ़िक्र काफ़ूर हुए और दिल सन्तोष से भर गए और कभी ना ख़त्म होने वाली दुआओं के खज़ाने पाकर यहां से रुख़सत हुए। मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वाले यह लोगों और नौजवान जब मस्जिद के हाल से बाहर आते तो उनके दलों की अजीब अवस्था थी। अक्सर की आँखों में आँसू थे।

*दोलमियाल पाकिस्तान से आने वाले एक नौजवान मुहम्मद नासिर इक़बाल ने अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहा कि मैं आज बहुत ख़ुश हूँ। इस वक़्त मेरे जिस्म पर कपकपी तारी है। मैंने हुज़ूर को अपनी आँखों से देखा है। मुझे बहुत सुकून मिला है। मैं अपनी हालत बयान नहीं कर सकता।

*घटियालियाँ, पाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाले एक नौजवान मन्सूर अहमद साहिब ने कहा कि इस वक़्त मेरे दिल की अजीब अवस्था है। मुझ से बात नहीं हो रही। उनकी आँखों से आँसू जारी थे। बड़ी मुश्किल से कहने लगे कि आज मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर को इतना क़रीब से देखा है।

*चौधरी सलीम अहमद साहिब जिनका सम्बन्ध लाहौर से था कहने लगे कि एक ख़्वाब था जो आज पूरा हो गया। मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाया है। मैं एक बहुत ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ और अल्लाह तआला का जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

*गुजरांवाला पाकिस्तान से आने वाले बशारत अहमद बाजवा साहिब कहने लगे कि इस वक़्त मेरी हालत ऐसी है कि मुझे अपने आप पर यक़ीन नहीं आ रहा कि मैं हुज़ूर अनवर से मिला हूं। पहले मैं ऐम.टी.ए पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआलाको देखता था और आज ज़िन्दगी में पहली बार मिला हूं। इस वक़्त जो मेरी भावनाएं हैं

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

''नमाज़ सारी तरक़्क़ियों की जड़ और माध्यम है इसी लिए कहा गया है कि नमाज़ मोमिन का मेराज है। (हज़रत मसीह मौऊद)

मोमिन वह है जो नमाज़ों में बाक़ायदा है।

अल्लाह तआला से मांगने के लिए कुछ तरीक़े और उसूल हैं और उन पर चलना पड़ेगा

नमाज़ वह है जिसमें विनय हो और एकाग्रता हो।

बेहतरीन दुआ फ़ातिहा है

निम्न और उच्च सब ज़रूरतें बिना शर्म के ख़ुदा से माँगो कि असल प्रदान करने वाला वही है।

सिर्फ दुआ से काम नहीं बनता कोशिश भी करनी पड़ेगी।

इबादत वही है जिससे अल्लाह तआला का क़ुरब पैदा हो

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 25 अक्तूबर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल बसीर महदी आबाद ,Nahe(जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ
وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ۔

(अल-हज 42)

अर्थात वे लोग हैं कि अगर हम उनको दुनिया में ताक़त प्रदान करें तो वे नमाज़ों को क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और नेक बातों का हुक्म देंगे और बुरी बातों से रोकेंगे और सब कामों का अन्जाम ख़ुदा के हाथ में है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने मोमिनों को इस तरफ़ ध्यान दिलाया है कि हक़ीक़ी मोमिन वे हैं जो ताक़त मिलने की अवस्था में, कमज़ोरी और बेचैनी के बाद अमन मिलने की अवस्था में, बेहतर हालात होने पर, आज़ादी से अपनी इबादतों और मज़हब पर अमल करने के हालात पैदा होने के बाद अपनी इच्छाओं और अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की तरफ़ ध्यान देने वाले नहीं बन जाते बल्कि नमाज़ क़ायम करने वाले होते हैं। अपनी नमाज़ों की तरफ़ ध्यान देने वाले होते हैं। अपनी मस्जिदों को आबाद करने वाले होते हैं। इन्सानियत की ख़िदमत करने वाले होते हैं। अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हुए ग़रीबों और मिस्कीनों के लिए अपने माल में से ख़र्च करने वाले होते हैं। धर्म के प्रकाशन के लिए क़ुर्बानियां करने वाले होते हैं। अल्लाह तआला के धर्म की इशाअत के लिए अपने माल में से ख़र्च कर के उसे पवित्र माल बनाते हैं। नेक बातों की तरफ़ ख़ुद भी ध्यान देते हैं और दूसरों को भी नेक बातें करने और अल्लाह तआला और इस के बंदों के हक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं। बुराईयों से ख़ुद भी रुकते हैं और दूसरों को भी बुराइयों से रोकने वाले हैं और क्योंकि ये सब काम अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हुए, अल्लाह तआला के हुक्म पर अनुकरण करने की वजह से करते हैं इसलिए अल्लाह तआला भी उनके कामों के बेहतरीन नतीजे पैदा फ़रमाता है क्योंकि हर चीज़ का फ़ैसला ख़ुदा तआला ने ही करना है। अत: जो काम ख़ुदा तआला की हिदायत पर, उस के हुक्म पर, उस के भय को दिल में रखते हुए किया जाए तो यक़ीनन उस का अंजाम तो बेहतर ही होगा। अत: यह उसूली बात अगर हम में से हर एक समझ ले तो अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाले बनते चले जाऐंगे

आपने यहां मह्दी आबाद में मस्जिद बनाई है। इसी तरह पिछले दिनों में फ़लडा (Fulda) मैं और वेज़ बादिन (Wiesbaden)में भी मस्जिद का उद्घाटन हुआ है। जमाअत जर्मनी सौ मस्जिदों के अधीन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मस्जिदें बनाने की तौफ़ीक़ पा रही है और यक़ीनन जमाअत के लोग मस्जिदों की तामीर के लिए इसलिए माली क़ुर्बानी कर रहे हैं कि अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करते हुए हमने अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करने हैं। पाकिस्तान से हिज्रत कर के आने के बाद यहां आकर हमारे माली हालात बेहतर हुए हैं। ये बात हम में से हर एक को इस तरफ़ ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि हम ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च करें और इस का घर तामीर करें जहां हम जमा हो कर नमाज़ का क़ियाम कर सकें। बाजमाअत नमाज़ें अदा कर सकें। अपनी नमाज़ों में ऐसी हालत पैदा कर सकें जिससे अल्लाह तआला की तरफ़ ख़ालिस ध्यान पैदा हो। आज़ादी से अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा कर सकें। पाकिस्तान में हमें मज़हबी आज़ादी नहीं है। वहां मुल्की क़ानून हमें मस्जिदें बनाने की इजाज़त नहीं देता। हमें आज़ादी से इबादत करने की इजाज़त नहीं देता कि हम वहां अल्लाह तआला का हक़ अदा कर सकें, उस की इबादत कर सकें। यहां अल्लाह तआला के हक़ की अदायगी के लिए हम मस्जिदें बना रहे हैं। हम पर अल्लाह तआला ने माली लिहाज़ से भी फ़ज़ल फ़रमाया है। इसलिए हर एक को यह सोचना चाहिए कि हम उस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने की भी कोशिश करेंगे और कर रहे हैं। हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है ताकि अपनी रुहानी और अख़लाक़ी हालतों को बेहतर करें तो हमारी ये मस्जिदें हमें इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाने वाली हैं और होनी चाहिऐं। अत: ये सोच है और इस पर भरपूर अमल की कोशिश है जो हर एक अहमदी को यहां रहते हुए अपने दिमाग़ों में भी रखनी चाहिए, दिलों में रखनी चाहिए और अपने अमल से साबित करनी चाहिए वर्ना मस्जिदें बनाना बेफ़ाइदा है

अत: हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि उनका मक़सद मस्जिदें बनाने से पूरा नहीं होगा बल्कि उस वक़्त पूरा होगा जब वे ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की इबादत की तरफ़ ध्यान देंगे और अपनी नमाज़ों को क़ायम करेंगे। बाजमाअत नमाज़ों के लिए मस्जिद में आएँगे। अपनी ध्यान नमाज़ों में अल्लाह तआला की तरफ़ रखेंगे, इसे क़ायम करेंगे। अगर ध्यान इधर उधर होता है तो फ़ौरन वापस ध्यान नमाज़ की तरफ़ और ख़ुदा तआला की तरफ़ फेरेंगे। इस बात की हक़ीक़त को समझेंगे कि नमाज़ में हमें अल्लाह तआला से बातें करने का मौक़ा मिल रहा है। सिर्फ ठूंगे नहीं मारने, सिर्फ़ सज्दे नहीं करने, सिर्फ़ अरबी अलफ़ाज़ नहीं अद अकरने बल्कि अपनी ज़बान में भी बातें करनी हैं। ऐसी नमाज़ों की कोशिश होनी चाहिए जिसमें अल्लाह तआला की मुलाकात हासिल हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुत्तक़ी की विशेषताएं बयान करते हुए, हक़ीक़ी मोमिन की विशेषताए बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि वे यकीनोनस्सलात करने वाले हैं। वे नमाज़ को खड़ी करते हैं। मुत्तक़ी से जैसा हो सकता है वह नमाज़ खड़ी करता है अर्थात कभी नमाज़ गिर पड़ती है फिर उसे खड़ा करता है। फ़रमाया अर्थात मुत्तक़ी ख़ुदा तआला से डरा करता है और वह नमाज़ को क़ायम करता है। इस हालत में विभिन्न किस्म की शंकाए और ख़तरे भी होते हैं जो पैदा हो कर उस के हुज़ूर में रुकावट होते हैं। दिलों की शंकाए, विचार अल्लाह तआला की तरफ़ से ध्यान फेरते हैं। ये दिलों की शंकाए और विचार जो अल्लाह तआला की तरफ़

से ध्यान फेरते हैं यही नमाज़ का गिरना है और वापस उस को खड़ा करना यही है कि फिर दोबारा ध्यान अल्लाह तआला की तरफ़ किया जाए लेकिन अगर दिल में तक़्वा है। तो फ़रमाया एक मुत्तक़ी, एक हक़ीक़ी मोमिन नफ़्स की इस आज़माइश में भी नमाज़ को खड़ा करता है अर्थात नमाज़ तो गिरती है, कई बार ध्यान इधर उधर चला जाता है लेकिन तक़्वा यह तक़ाज़ा करता है कि कोशिश कर के फिर नमाज़ को खड़ा करें। फिर अपना ध्यान दोबारा नमाज़ की तरफ़ लेकर आएं और ख़ुदा तआला की तरफ़ लेकर आएं तो यह उसे खड़ा करना है। फ़रमाया कि वह तकल्लुफ़ और कोशिश से बार-बार उसे खड़ा करता है और अगर मुस्तक़िल मिज़ाजी से नमाज़ पर इन्सान क़ायम रहे और इस बात की कोशिश करता रहे कि मैंने अपनी नमाज़ के उच्च स्तर हासिल करने हैं तो फिर एक वक़्त ऐसा आता है कि अल्लाह तआला अपने कलाम के द्वारा हिदायत प्रदान कर देता है।

फिर आप ने हिदायत की वज़ाहत फ़रमाई कि हिदायत क्या होती है? फ़रमाया कि वह ऐसी हालत होती है कि जब नमाज़ के खड़ी करने, उस को क़ायम करने की कोशिश का मामला नहीं रहता। यह नहीं होता कि नमाज़ गिर गई। नमाज़ से ध्यान हट गया और फिर दोबारा नमाज़ की तरफ़ ध्यान पैदा हुा। यह मामला नहीं रहता बल्कि हिदायत हासिल करने के बाद नमाज़ उस के लिए ग़िज़ा की अवस्था में हो जाती है। इस तरह हो जाती है जिस तरह ख़ुराक है। खाना खाना इन्सान के जिस्म के लिए ज़रूरी है। इसी तरह रुहानी तरक्की के लिए नमाज़ उस का हिस्सा बन जाती है, ख़ुराक बन जाती है। फ़रमाया जिस तरह ज़ाहरी काने के बग़ैर ज़िन्दगी नहीं रहती, यह वज़ाहत मैं इस की कर रहा हूँ कि जिस तरह ज़ाहरी खाने के बग़ैर ज़िन्दगी नहीं रहती इसी तरह नमाज़ के बग़ैर भी ज़िन्दगी नहीं रहती और सिर्फ यही नहीं कि सिर्फ ज़िन्दगी क़ायम रखने के लिए काना खाना है बल्कि फ़रमाया कि यह काना ऐसी है कि इस का मज़ा भी आता है। आप ने फ़रमाया कि नमाज़ में इस को वह लज़्ज़त और आन्नद प्रदान किया जाता है जैसे सख़्त प्यास के वक़्त ठंडा पानी पीने से हासिल होता है क्योंकि वह निहायत शौक से उसे पीता है और तृप्त हो कर इस से आन्नद उठाता है। प्यास लगी हो, बहुत प्यास हो, बुरा हाल हो, पानी ना मिल रहा हो, फिर पानी मिल जाए और ठंडा पानी मिल जाए तो इस से जो आन्नद आता है वह इसी तरह है जिस तरह एक हक़ीक़ी हिदायत पाने वाले को नमाज़ पढ़ने से आता है या फिर एक और उदाहरण आप ने दी कि कोई भूखा हो और उसे निहायत उच्च किस्म का अच्छे स्वाद वाला खाना मिल जाए तो उसे खा कर ख़ुशी मिलती है। ऐसे ही हक़ीक़त में ख़ुशी हक़ीक़ी नमाज़ पढ़ने वाले को मिलती है। अत: यह वे नमाज़ें हैं जो हक़ीक़त में नमाज़ें हैं कि ख़ुश हो कर नमाज़ पढ़नी है ना कि बूझ समझ कर नमाज़ें पढ़नी हैं बल्कि आप ने यह उदाहरण भी दिया है कि हक़ीक़ी मोमिन के लिए नमाज़ एक किस्म का नशा हो जाती है जिसके बग़ैर वे सख़्त कष्ट महसूस करता है। जिस तरह कि नशा करने वाला आदमी जो होता है इस को नशा ना मिले तो बड़ी तकलीफ़ महसूस करता है। बड़ी व्याकुलता और बेचैनी महसूस करता है लेकिन नमाज़ के अदा करने से इस के दिल में एक ख़ास आन्नद और ठंडक महसूस होती है। आप ने फ़रमाया कि शब्दों में वह लज़्ज़त वर्णन नहीं हो सकती जो हक़ीक़ी नमाज़ पढ़ने वाले को लज़्ज़त मिलती है। आप ने फ़रमाया कि मोमिन मुत्तक़ी नमाज़ में लज़्ज़त पाता है इसलिए नमाज़ को ख़ूब सँवार सँवार कर पढ़ना चाहिए। फ़रमाया नमाज़ सारी तरक़्क़ियों की जड़ और माध्यम है। इसी लिए कहा गया है कि नमाज़ मोमिन का मेराज है और इस के द्वारा ख़ुदा तआला तक पहुंचा जा है।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 309-310)

अत: अगर हमारी मस्जिदें बनें तो ऐसी नमाज़ें अदा करने के लिए मस्जिदें बनें। हम मस्जिदें बनाने की तरफ़ ध्यान दें तो इस मेराज को हासिल करने के लिए। यह हमारी मेराज होनी चाहिए। यही वह माध्यम है जो ख़ुदा तआला तक ले जाता है और ख़ुदा तआला से बातें करने का अवसर मिलता है। अत: मायूस नहीं होना चाहिए कि यह स्थान किस तरह मिले। निरन्तर कोशिश से यह स्थान अल्लाह तआला देता है

बहुत से लोग अब भी सवाल करते हैं, मुझे भी लिखते हैं कि नमाज़ में ध्यान क़ायम नहीं रहता तो यही उस का ईलाज है कि कोशिश कर के बार-बार ध्यान क़ायम रखे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में भी किसी दोस्त ने यह सवाल किया कि मेरा दिल आजकल ऐसा हो रहा है कि नमाज़ में लज़्ज़त और विनय पैदा नहीं होती और मैं इस वजह से निहायत सख़्त तकलीफ़ में रहता हूँ क्योंकि एक बार नमाज़ की लज़्ज़त का मज़ा चख चुका हूँ। चाहे शंकाए पैदा होते रहते हैं। यद्यिप उनको बहुत रद्द करता हूँ फिर भी शंकाऐं पीछा नहीं छोड़तीं। क्या करूँ? फ़रमाया कि यह भी ख़दा तआला का फ़ज़ल और एहसान है कि इन्सान इस तरह की शंखाओं का मग़्लूब नहीं होता। शंकाएं पैदा हो रही हैं, आपको एहसास पैदा हो गया है। उनको ग़ालिब नहीं होने दिया। फ़रमाया कि जब ऐसी हालत हो कि इन्सान उन शंकाओं को ग़ालिब ना आने दे अपने ऊपर तो यह भी सवाब की हालत है। अल्लाह तआला उस का भी सवाब देता है, ऐसा रहीम तथा करीम ख़ुदा है। फ़रमाया कि नफ़्स अम्मारा वाले को तो ख़बर ही नहीं होती कि बुराई क्या चीज़ है। वह तो बुराइयां करता चला जाता है इस को तो कुछ नहीं पता लगता। नफ़्स लव्वामा है जो बुराई करता है पर बुराई पर हमेशा घबराता है और शर्मिंदा होता है। अत: यह नफ़्स लव्वामा की हालत जो है इस में जब बुराई पर पर शर्मिंदा हो, घबराए, एहसास पैदा हो, ख़्याल पैदा हो तो इस को झटके। इस का भी अल्लाह तआला सवाब दे देता है और शर्मिंदा होता है और तौबा करता रहता है। ऐसा शख़्स नफ़्स का ग़ुलाम नहीं है। फ़रमाया कि परेशानी की कोई बात नहीं है। अगर शंकाएं और विचार आते हैं और फिर उनको दूर करने की कोशिश करते हो तो तुम्हें सवाब मिल जाता है, अल्लाह तआला उस का भी सवाब दे देता है। ऐसा शख़्स नफ़्स का ग़ुलाम नहीं है और इस हालत में होना एक हद तक ज़रूरी भी है। इस से दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि इस में बड़े बड़े सवाब हैं यहां तक कि अल्लाह तआला ख़ुद अपने आप नूर और शान्ति नाज़िल करता है। ख़ुदा की रहमत का वक़्त आता है और एक ठंड पड़ जाती है और वह बात दूर हो जाती है। इन्सान को चाहिए कि थक ना जावे। सज्दे में يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْث बहुत पढ़ा करो। फ़रमाया सज्दे में يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ बहुत पढ़ा करो। लेकिन याद रखो कि जल्दबाज़ी ख़ौफ़नाक है। जल्दबाज़ी नहीं दिखानी। इस्लाम में इन्सान को बहादुर बनना है। जो जल्दबाज़ी दिखाता है वह बहादुर नहीं है ,वह बुज़दिल है। वर्षों की मेहनत और मशक़्क़त के बाद आख़िर शैतान के हमले कमज़ोर हो जाते हैं और वह भाग जाता है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 347)

अत: यह उसूली बात हमेशा याद रखने वाली है कि जल्द-बाज़ी नहीं करनी और स्थायी अल्लाह तआला को पकड़े रखना है। इस के आगे झुके रहना है। आख़िर एक दिन शैतान हार मान कर भाग जाएगा लेकिन अगर जल्द-बाज़ी दिखाई, नमाज़ को क़ायम करने की भरपूर कोशिश ना की तो फिर इन्सान शैतान के पंजे में आ जाता है। प्राय देखने में यही आया है कि इन्सान जल्दबाज़ है। शीघ्र नतीजे ना मिलें तो कहता है कि दुआएं करने का कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। यह बात याद रखनी चाहिए कि इन्सान अगर सिर्फ दुनिया ही दुनिया मांगता रहे तो सिर्फ ऐसी दुआएं फिर अल्लाह तआला क़बूल नहीं करता। हाँ अल्लाह तआला से अपनी रुहानी और धार्मिक तरक़्क़ी मांगी जाए, अल्लाह तआला का क़ुरब मांगा जाए तो अल्लाह तआला फिर क़रीब आता है और फिर उस शख़्स की दुनियावी ज़रूरतें भी पूरी कर देता है। अत: अल्लाह तआला से मांगने के लिए भी कुछ तरीक़े और उसूल हैं और उन पर चलना पड़ेगा। यह किस तरह हो सकता है कि अल्लाह तआला एक तरफ़ तो यह फ़रमाए कि اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُم ,तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआएं सुनूँगा और दूसरी तरफ़ बन्दा पुकारता रहे और अल्लाह तआला सुने ही ना। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय को बयान फ़रमाते हुए हैं कहते हैं

नमाज़ों में दुआएं और दुरूद हैं। ये अरबी भाषा में हैं। मगर तुम पर यह हराम नहीं कि नमाज़ों में अपनी ज़बान में भी दुआएं मांगा करो। ख़ुदा का हुक्म है कि नमाज़ वह है जिसमें विनय हो और एकाग्रता हो। विनय पैदा करो, दिल को नरम करो। दिल में डर पैदा हो कि अल्लाह तआला के सामने खड़ा हूँ, इस से मांग रहा हूँ। ऐसे ही लोगों के गुनाह दूर होते हैं। फ़रमाया कि ऐसे ही लोगों के गुनाह दूर होते हैं जिनमें विनय होती है। अत: फ़रमाया ۔اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ। अर्थात नेकियां बुराइयों को दूर करती हैं। यहां हसनात के अर्थात नमाज़ के हैं और एकाग्रता और विनय अपनी भाषा में मांगने से हासिल होता है अर्थात जो विनय पैदा होता है, इन्सान का दिल पिघलता है वह अपनी ज़बान में इन्सान मांगे तो तभी पैदा हो सकता है जब समझ भी आ रही हो कि क्या मांग रहा है। अत: फ़रमाया कि अपनी भाषा में दुआ किया करो। फिर आप फ़रमाते हैं अल्लाह तआला ने जो दुआएं सिखाई हैं वे दुआएं भी बड़ी ज़रूरी हैं, करनी चाहियें और उनमें से बेहतरीन दुआ फ़ातिहा है क्योंकि वह सारगर्भित दुआ है। सूर फ़ातिहा में अल्लाह तआला ने हमें एक दुआ सिखाई है اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ इस के अर्थ बड़े व्यापक हैं और इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि जब ज़मींदार को ज़मींदारी

का तरीका आ जाए तो वह ज़मींदारी के सीधे रास्ता पर पहुंच जाएगा। जो ज़मींदार है एक उस को खेती बाड़ी करने का तरीक़ा आ जाए, खेती करनी आ जाए, हल चलाना आ जाए, बीज फेंकना आ जाए, यह पता हो कि किस वक़्त खाद देनी है ,किस वक़्त पानी देना है ,किस वक़्त स्प्रे करना है तो फ़रमाया कि जब उस की यह हालत हो जाती है तो वह स्रात-ए-मुस्तक़ीम अर्थात सीधे रास्ते पर पहुंच गया, अपने इस फ़ील्ड के सीदे रास्ता पर , ज़मींदारी के स्राते मुस्तक़ीम पर। इसी तरह तुम ख़ुदा के मिलने का सीधा रास्ता तलाश करो और दुआ करो कि हे इलाही मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूँ और रास्ता गुम हूं मेरी रहनुमाई कर। छोटी और बड़ी सब जरूरतें बिना शर्म के ख़ुदा से माँगो कि असल प्रदान करने वाला वही है, वही देने वाला है। बहुत नेक वही है जो बहुत दुआ करता है क्योंकि अगर किसी कंजूस के दरवाज़े पर, बहुत कंजूस आदमी हो उस के दरवाज़े पर भी मांगने वाला हर-रोज़ जा कर सवाल करेगा तो आख़िर एक दिन उस को भी शर्म आ जाएगी। फिर ख़ुदा तआला से मांगने वाला और वह ख़ुदा जो बेमिसल करीम है, ऐसा करीम है जिसका उदाहरण कोई नहीं वहां से क्यों ना पाए। अत: मांगने वाला कभी ना कभी ज़रूर पा लेता है। नमाज़ का दूसरा नाम ही दुआ है जैसे फ़रमाया اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ कि तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआ सुनूँगा। फिर फ़रमाया وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ जब मेरा बंदा मेरे बारे में सवाल करे अत: मैं बहुत ही क़रीब हूँ। मैं पुकारने वाले की दुआ क़बूल करता हूँ जब वह पुकारता है। आप ने फ़रमाया कि कुछ लोग उस की ज़ात पर, अल्लाह तआला की ज़ात पर शक करते हैं लेकिन अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि मेरी हस्ती का निशान यह है कि तुम मुझे पुकारो और मुझ से माँगो। मैं तुम्हें पुकारूँगा और जवाब दूँगा और तुम्हें याद करूँगा।

अगर यह कहो, लोग कह देते हैं कि हम बड़ा पुकारते हैं तो जवाब नहीं देता। आप फ़रमाते हैं देखो तुम एक जगह खड़े हो कर एक ऐसे शख़्स को जो तुमसे बहुत दूर है पुकारते हो और एक तो दूरी की दूरी है और दूसरे तुम्हारे अपने कानों में कोई नुक़्स भी है, कान भी थोड़े से ख़राब हैं सुन भी नहीं सकते। वह शख़्स जिसको तुम दूर से पुकार रहे हो वह तुम्हारी आवाज़ सुनकर तुम्हें जवाब देगा मगर जब वह दूर से जवाब देगा तो तुम बहरेपन के कारण सुन नहीं सकोगे। क्योंकि कानों में तुम्हारे दोष है इसलिए दूर से जवाब सुन नहीं सकोगे। अत: फ़रमाया कि जूँ-जूँ तुम्हारे बीच पर्दे और दूरी और फासला कम होता जाएगी तो तुम ज़रूर आवाज़ सुनोगे। जितना कोशिश कर कर के अल्लाह तआला के क़रीब आते जाओगे तो इस की आवाज़ भी सुन लोगे। फ़रमाया कि जब से दुनिया की पैदाइश हुई है इस बात का सबूत चला आता है कि वह अपने ख़ास बंदों से वार्तालाप करता है। अगर ऐसा ना होता तो धीरे धीरे बिलकुल यह बात समाप्त हो जाती कि उस की हस्ती है भी। अत: ख़ुदा की हस्ती के सबूत का सबसे ज़बरदस्त माध्यम यही है कि हम उस की आवाज़ को सुन लें या देखें या वार्तालाप। या देख लिया या बात कर ली। अत: आजकल वार्तालाप क़ाइम मक़ाम है देखने के ।हाँ जब तक ख़ुदा के और इस के मांगने वाले के बीच कोई पर्दा है इस वक़्त तक हम सुन नहीं सकते। जब बीच का पर्दा उठ जाएगा तो इस की आवाज़ सुनाई देगी

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 226-227)

अत: यह दरमयानी पर्दे उठाने की ज़रूरत है और यह भी अल्लाह तआला का वादा है कि जो मेरी तरफ़ संजीदगी से आएगा, मेरी ज़ात की हक़ीक़त को समझ कर मेरी तरफ़ बढ़ेगा तो मैं भी इस की तरफ़ आऊँगा। इसी बात को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि बन्दा मेरी तरफ़ एक क़दम आता है तो मैं इस की तरफ़ दो क़दम आता हूँ। बंदा चल के आता है तो मैं दौड़ के आता हूँ।

(सही अल-बुख़ारी किताबुत्तौहीद बाब ज़िक्रुन्नबी हदीस 7536)

अत: अगर दोष है तो हमारे में। अत: हमें अल्लाह तआला की तरफ़ जाने की ज़रूरत है। इस के रास्ते तलाश करने इस से मुलाक़ात करने के लिए भी इसी की मदद की ज़रूरत है। हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का दावा करते हैं हमारे लिए ये ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की तरफ़ जाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सिर्फ एक बात पर अनुकरण कर लेना कि मस्जिदें बनाओ ताकि इस्लाम का परिचय हो, काफ़ी नहीं है बल्कि उस के लिए व्यवहारात्मक कोशिशों की भी ज़रूरत है और फिर अल्लाह तआला की मदद की भी ज़रूरत है और जब कोशिश के साथ अल्लाह तआला की मदद मिलेगी तो फिर ही कामयाबी होगी। अत: इस बात को बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

याद रखो कि बैअत के वक़्त तौबा के इक़रार में एक बरकत पैदा होती है। अगर साथ उस के धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने की शर्त लगा ले तो तरक़्क़ी होती है। बैअत कर ली बरकत पैदा हो गई। साथ यह शर्त हो कि धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखूँगा तो फिर तरक़्क़ी भी होती जाएगी मगर यह मुक़द्दम रखना तुम्हारे अधिकार में नहीं बल्कि अल्लाह तआला की सहायता की सख़्त ज़रूरत है। इस के लिए अल्लाह तआला की मदद चाहिए जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا कि जो लोग कोशिश करते हैं हमारी राह में अन्त में रहनुमाई पर पहुंच जाते हैं। फ़रमाया कि जिस तरह वह दाना बोने के बिना कोशिश और पानी देने के बे बरकत रहता है, एक किसान बीज बोता है या इन्सान लगाता है अगर उस को इस की पूरी तरह मेहनत से पाला ना जाए, उसे पानी ना लगाया जाए तो वह बे बरकत रहता है। इस में वह बरकत नहीं पड़ती। उगता ही नहीं या उगेगा तो बहुत कमज़ोर होगा बल्कि ख़ुद भी फ़ना हो जाता है। इसी तरह तुम भी इस इक़रार को हर-रोज़ याद ना करोगे। फ़रमाया कि इस इक़रार को, धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने के इक़रार को हर-रोज़ याद ना करोगे और दुआएं ना माँगोगे कि हे ख़ुदा हमारी मदद कर तो फ़ज़्ले इलाही वारिद नहीं होगा। फ़रमाया कि बग़ैर अल्लाह तआला की सहायता के तबदीली नामुमकिन है। यह हो ही नहीं सकता कि अल्लाह तआला की मदद के बग़ैर इन्सान में तबदीली आ जाए ।इसलिए उस की मदद मांगने के लिए, उस का फ़ज़ल मांगने के लिए दुआ बहरहाल करनी पड़ेगी। फ़रमाया कि चोर, बदमाश, ज़ान करने वाले इत्यादि जुर्म करने वाले लोग हर वक़त ऐसे नहीं रहते बल्कि कई वक़्त उनको ज़रूर लज्जा होती है। यही हाल हर बुराई करने वाले का है। इस से साबित होता है कि इन्सान में नेकी का ख़्याल ज़रूर है। अत: इस ख़्याल के लिए उस को अल्लाह तआला की सहायता की बहुत ज़रूरत है। इसी लिए पांचों समय नमाज़ में सूर फ़ातिहा के पढ़ने का हुक्म दिया जिस में इय्याक नअबदो और फिर इय्याक नसतईन इबादत भी तेरी ही करते हैं और मदद भी तुझ से ही लेते हैं।

इस में दो बातों की तरफ़ इशारा फ़रमाया है। अर्थात हर नेक काम में शक्तियों, तदबीरों, कोशिशों से काम लें अर्थात हर नेक काम करने के लिए जो इन्सानी ताक़तें अल्लाह तआला ने दी हुई हैं जो तदबीरें हो सकती हैं, जो कोशिश हो सकती है वह करनी है। यह इशारा है नअबदों की तरफ़, इबादत करने की तरफ़। क्योंकि जो शख़्स केवल दुआ करता है और कोशिश नहीं करता वह सफल नहीं होता। सिर्फ दुआ से काम नहीं बनता कोशिश भी करनी पड़ेगी वह कामयाब ही नहीं हो सकता। जैसे किसान बीज बो कर अगर कोशिश ना करे तो फल का उम्मीदवार कैसे बन सकता है और यह अल्लाह तआला की आदत है, यह अल्लाह तआला की सुन्नत है। यह अगर बीज बो कर सिर्फ दुआ करते हैं तो ज़रूर वंचित रहेंगे। अगर उस को पानी नहीं लगाते, उस की गोडी नहीं करते, उस की सुरक्षा नहीं करते तो इन्सान

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

महरूम रहेगा। जैसे दो किसान हैं एक तो सख़्त मेहनत और हल चलाता करता है, गोडी करता है, मेहनत करता है तो यह ज़रूर कामयाब होगा। दूसरा किसान मेहनत नहीं करता या कम करता है इस की पैदावार हमेशा नाक़िस रहेगी यानी बिलकुल बहुत कम होगी जिस से वह शायद सरकारी महसूल भी अदा ना कर सके और वह हमेशा दरिद्र रहेगा। इसी तरह धार्मिक काम भी हैं। इन्ही में मुनाफ़िक़ , इन्ही में निकम्मे, इन्ही में सालिह , इन्ही में अब्दाल, क़ुतुब, ग़ौस बनते हैं। लोग एक तरह के ही हैं लेकिन उनमें मुनाफ़िक़ लोग भी पैदा हो जाते हैं, निकम्मे ,काम नहीं करने वाले भी हैं लेकिन इन्ही में सालिह लोग भी हैं जो अब्दाल तक पहुंच जाते हैं। क़ुतुब बन जाते हैं। ग़ौस बनते हैं और ख़ुदा तआला के नज़दीक दर्जा पाते हैं और कई चालीस चालीस वर्ष से नमाज़ पढ़ते हैं मगर अभी पहले दिन पर ही है, कोई तरक़्क़ी नहीं और कोई तबदीली नहीं होती। तीस रोज़ों से कोई फ़ायदा महसूस नहीं करते। रमज़ान के तीस रोज़े भी रख लिए तब भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। रमज़ान के बाद फिर वहीं आ जाते हैं

बहुत लोग कहते हैं कि हम बड़े मुत्तक़ी और ज़माना से नमाज़ पढ़ने वाले हैं मगर हमें अल्लाह तआला की सहायता नहीं मिलती। दावा तो मुत्तक़ी होने का है और बड़ी नमाज़ें पढ़ने का दावा है लेकिन साथ कहते हैं कि अल्लाह तआला की सहयाता नहीं मिलती। इस का कारण यह है कि रस्मी और तक़लीदी इबादत करते हैं। सिर्फ ज़ाहिरी इबादत होती है। तरक़्क़ी का कभी ख़्याल नहीं किया। गुनाहों की तलाश ही नहीं। यह कोशिश ही नहीं करते कि तलाश करें कि मेरे अंदर कौन कौन से गुनाह हैं। सच्ची तौबा की तलब ही नहीं। गुनाहों की तरफ़ ध्यान होगी , इन्सान तलाश करे कौन कौन से गुनाह हैं तो फिर सच्ची तौबा भी होगी और वह (तौबा तलब करेगा। अत: वह पहले क़दम पर ही रहते हैं। ऐसे इन्सान जानवर से कम नहीं। तो फिर तो ये जानवरों वाली हालत है। इन्सान और जानवर में कोई फ़र्क़ नहीं। ऐसी नमाज़ें ख़ुदा की तरफ़ से अज़ाब लाती हैं, क़बूल नहीं होतीं बल्कि मुँह पर मारी जाती हैं। नमाज़ तो वह है जो अपने साथ तरक़्क़ी लाए जैसे तबीब से एक बीमार ईलाज करवाता है। एक नुस्ख़ा वह दस रोज़ इस्तिमाल करता है फिर इस से इस को रोज़ बरोज़ नुक़्सान हो रहा है। जब इतने दिनों के बाद फ़ायदा ना हो तो बीमार को शक पड़ जाता है कि नुस्ख़ा ज़रूर मेरे मिज़ाज के अनुसार नहीं और यह बदलना चाहिए। अत: रस्म और रस्मी इबादत ठीक नहीं है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात बाग 7 पृष्ठ 225-226)

इस को भी बदलना पड़ेगा । सोचना पड़ेगा कि क्या वजह है ?क्यों कि अल्लाह तआला का दावा है कि मैं ख़ुद दुआ क़बूल करता हूँ और मेरी दुआएं क़बूल नहीं हो रहीं। अत: इबादत वही है जिससे अल्लाह तआला का क़ुरब पैदा हो

फिर नमाज़ की हक़ीक़त बयान फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि "नमाज़ असल में दुआ है। नमाज़ का एक एक शब्द जो बोलता है वह निशाना दुआ का होता है। अगर नमाज़ में दिल ना लगे तो फिर अज़ाब के लिए तैयार रहे क्योंकि जो शख़्स दुआ नहीं करता वह सिवाए उस के कि हलाकत के नज़दीक ख़ुद जाता है और क्या है। एक हाकिम है जो बार-बार इस बात की घोषणा करता है।' आवाज़ देता है "कि मैं दुखियारों का दुख उठाता हूँ।"हुकूमत ने ऐलान किया, समय के हाकिम ने ऐलान किया कि मैं जो मजबूर हैं ,दुखी हैं उनका दुख दूर करता हूँ "मुश्किल वालों की मुश्किल हल करता हूँ। मैं बहुत रहम करता हूँ। असहायों की सहायता करता हूँ लेकिन एक शख़्स ,जो कि मुश्किल में मुबतला है,इस के पास से गुज़रता है और इस की आवाज़ की परवाह नहीं करता।' वह बुला रहा है और मुश्किल में गिरफ़्तार एक शख़्स है जो उस के पास से गुज़र जाता है और परवाह नहीं करता "ना अपनी मुश्किल वर्णन कर के सहायता चाहता है तो सिवाए उस के कि वह तबाह हो और क्या होगा? यही हाल ख़ुदा तआला का है कि वह तो हर वक़त इन्सान को आराम देने के लिए तैयार है शर्त यह है के कोई इस से दरख़ास्त करे। क़ुबूलियत-ए-दुआ के लिए ज़रूरी है कि ना-फ़रमानी से रुका रहे और दुआ बड़े ज़ोर से करे क्योंकि पत्थर पर पत्थर ज़ोर से पड़ता है तब आग पैदा होती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 70)

अत: जब यह हालत हम अपने अंदर पैदा कर लें कि हमारी नमाज़ें भी और हमारे कर्म भी ख़ुदा तआला की ही रज़ा हासिल करने के लिए हो जाएं तो फिर ख़ुदा तआला भी हमारे ख़ौफ़ों को हमेशा अमन में बदलता चला जाएगा। ये बात हमेशा याद रखें कि यहां आकर जो कुछ हमें मिला है अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मिला है और इस में इज़ाफ़ा भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही होगा। इसलिए अल्लाह तआला की इबादत की तरफ़ ध्यान और इस के बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी के लिए कोशिश उस के फ़ज़लों को हासिल करने के लिए ज़रूरी है। आप लोग ख़ुद अपने जायज़े ले सकते हैं कि किस हद तक हम नमाज़ के क़ियाम की कोशिशें कर रहे हैं? किस हद तक ख़ुदा तआला से हर एक का ताल्लुक़ क़ायम हो गया है या उस के लिए कोशिश कर रहे हैं? किस हद तक दुनिया के काम हमारी नमाज़ों में रोक हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद हमें हमेशा सामने रखना चाहिए कि कुफ़्र और ईमान के दरमयान फ़र्क़ करने वाली बात, वाली चीज़ जो है वो नमाज़ का छोड़ना है।

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयान इतलाक़ इस्मुल कुफ़र अला मन तरकुस्सलात हदीस 82)

कुफ़्र और ईमान के दरमयान फ़र्क़ किस चीज़ से होगा इसी से होगा कि नमाज़ छोड़ दी। पस ये इरशाद हमें हिला देने वाला होना चाहिए कि मोमिन वो है जो नमाज़ों में बाक़ायदा है वर्ना इस में और एक काफ़िर में कोई फ़र्क़ नहीं है। नमाज़ बाजमाअत पढ़ने वाले का सवाब भी अल्लाह तआला ने सिर्फ ये नहीं कहा कि नमाज़ें पढ़ो बल्कि बाजमाअत पढ़े। हक़ अदा कर के पढ़े तो पच्चीस गुना और बाअज़ जगह सत्ताईस गिना सवाब रखा हुआ है बयान किया गया है

(सही अल-बख़ारी किताब इलाज़ इन बाब फ़ज़ल सला अलजमाइ हदीस 645-646)

इस के बावजूद अगर बग़ैर किसी जायज़ कारण के हम इस तरफ़ ध्यान ना दें तो फिर हमारी किस क़दर बदक़िस्मती है। अत: अगर हमने मस्जिदें बनाई हैं तो मस्जिदों के हक़ अदा करने की भी ज़रूरत है। अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करने की भी ज़रूरत है। अपनी माली क़ुर्बानीयों की तरफ़ ध्यान देने की भी ज़रूरत है। ख़ुद नेकियां करने और अपने अख़लाक़ बुलंद करने और दूसरों को नेकियां करने की नसीहत की ज़रूरत है। ख़ुद यहां के माहौल की बुराईयों से बचने और दूसरों को बचाने की ज़रूरत है वर्ना हमारा बैअत का वादा भी सिर्फ लफ़्ज़ी बैअत का वादा है। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को हमेशा सामने रखना चाहिए। आप फ़रमाते हैं

अत: तुम ऐसे हो जाओ कि ख़ुदा तआला के इरादे तुम्हारे इरादे हो जाएं उसी की रज़ा में रज़ा हो। अपना कुछ भी ना हो सब कुछ उस का हो जाए। सफ़ाई के यही अर्थ हैं कि दिल से ख़ुदा तआला की व्यवहारात्मक और एतिक़ादी विरोध उठा दिया जाए। और ख़ुदा तआला किसी की सहायता नहीं करता जब तक वह ख़ुद नहीं देखता कि इस का इरादा मेरे इरादे और इस की मर्ज़ी मेरी रज़ा में फ़ना नहीं है

फ़रमाया मैं जमाअत की अधिक संख्या से कभी ख़ुश नहीं होता। अब अगर उस वक़्त जिस वक़्त आप बात फ़र्मा रहे हैं अहमदियों की संख्या चार लाख बयान की जाती थी कि चार लाख या इस से भी ज़्यादा है मगर हक़ीक़ी जमाअत के अर्थ यह नहीं हैं कि हाथ पर हाथ रखकर सिर्फ बैअत कर ली बल्कि जमाअत हक़ीक़ी तौर से जमाअत कहलाने की तब अधीकारी हो सकती है कि बैअत की हक़ीक़त पर अनुकरण करने वाली हो। सच्चे तौर से उनमें एक पवित्र तबदीली पैदा हो जाए और

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

उनकी ज़िन्दगी गुनाह की गन्दिगयों से बिलकुल साफ़ हो जाए। नफ़सानी इच्छाओं और शैतान के पंजे से निकल कर ख़ुदा तआला की रज़ा में लीन हो जाए। अल्लाह के हक और बन्दों के हक को दिल की गहराई से पूरे और कामिल तौर से अदा करें। धर्म के लिए और धर्म के प्रकाशन के लिए उनमें एक तड़प पैदा हो जाए। अपनी इच्छाओं और इरादों और आरज़ूओं को फ़ना कर के ख़ुदा के बन जाएं। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि तुम गुमराह हो पर जिसे मैं हिदायत दूं। तुम सब अंधे हो मगर वह जिसको में नूर बख्शों। तुम सब मुर्दे हो मगर वही ज़िन्दा है जिसको मैं रुहानी ज़िंदगी का शर्बत पिलाओं। इन्सान को ख़ुदा तआला की सत्तारी ढाँके रखती है वर्ना अगर लोगों के अंदरूनी हालतों और अन्दरूनी दुनिया के सामने कर दिए जाएं तो क़रीब है कि कुछ कुछ के क़रीब तक भी जाना पसंद ना करें। यह तो अल्लाह तआला की सत्तारी है जो हमारे गुनाह ढाँपे हुए हैं। अगर गुनाह ज़ाहिर हो जाएं और एक दूसरे पर ज़ाहिर होना शुरू हो जाएं तो कुछ लोग शायद कुछ दूसरे लोगों के क़रीब भी ना जाएं। फ़रमाया ख़ुदा तआला बड़ा सत्तार है। इन्सानों की बुराइयों पर हर एक को सुचना नहीं देता। अत: इन्सान को चाहिए कि नेकी मैं कोशिश करे और हर वक़त दुआ में लगा रहे । यक़ीनन जानो कि जमाअत के लोगों में और उनके ग़ैर में अगर कोई स्पष्ट अन्तर ही नहीं है तो फिर ख़ुदा कोई किसी का रिश्तेदार तो नहीं है। हम अहमदी हुए, बैअत हुई, हमारे में और दूसरों में कोई फ़र्क़ नहीं है तो फिर ख़ुदा कोई किसी का रिश्तेदार नहीं है। क्या वजह है कि उनको इज़्ज़त दे और हर तरह से हिफ़ाज़त में रखे। अगर फ़र्क़ नहीं है तो अल्लाह तआला किसी का रिश्तेदार तो नहीं है कि ज़रूर हमें इज़्ज़त दे और उनको ज़िल्लत दे और अज़ाब में गिरफ़्तार करे । फ़रमाया कि اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ। मुत्तक़ी वही हैं कि ख़ुदा तआला से डर कर ऐसी बातों को तर्क कर देते हैं जो अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ हैं। नफ़्स और ख़्वाहिशात नफ़सानी को और दुनिया इस के सामानों को को अल्लाह तआला के मुक़ाबले में तुच्छ समझें। ईमान का पता मुक़ाबला के समय लगता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि एक कान से सुनते हैं दूसरी तरफ़ से निकाल देते हैं इन बातों को दिल में नहीं उतारते। चाहे जितनी नसीहत करो मगर उनको असर नहीं होता। याद रखो कि ख़ुदा तआला बड़ा बेनयाज़ है जब तक बहुत अधिक से और बार-बार व्याकुलता से दुआ नहीं की जाती वह परवाह नहीं करता। देखो किसी की बीवी या बच्चा बीमार हो, किसी पर सख़्त सदमा आ जाए तो इन बातों के लिए उस को कैसा बेचैनी होता है। अत: दुआ में भी जब तक सच्ची तड़प और व्याकुलता की हालत पैदा ना हो तब तक वह बिलकुल बे-असर और बेहूदा काम है। क़बूलीयत के लिए व्याकुलता शर्त है जैसा कि फ़रमाया।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 136-137)

यानी कौन किसी व्याकुल की दुआ सुनता है जब वह ख़ुदा से दुआ करता है और इस की तकलीफ़ को दूर कर देता है

फिर आप फ़रमाते हैं कि अपना सुधार जो करते हो तो अपने घर वालों को भी अपने सुधार में शामिल करो। बीवी बच्चों का सुधार करना भी तुम्हारा फ़र्ज़ है। फ़रमाया "ख़ुदा तआला की सहायता उन्ही के साथ होती है जो हमेशा नेकी में आगे ही आगे क़दम रखते हैं एक जगह नहीं ठहर जाते और वही हैं जिनका अंजाम बख़ैर होता है। कुछ लोगों को हमने देखा है कि उनमें बड़ा शौक़ ज़ौक़ और शिद्दत रक्त होती है मगर आगे चल कर बिलकुल ठहर जाते हैं और आख़िर उनका अंजाम बख़ैर नहीं होता। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में यह दुआ सिखलाई है कि इस اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ (अल-अहक़ाफ़:16)मेरे बीवी बच्चों की भी इस्लाह फ़र्मा। अपनी हालत की पाक तबदीली और दुआओं के साथ साथ अपनी औलाद और बीवी के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए क्योंकि प्राय फ़ित्ने औलाद की वजह से इन्सान पर पड़ जाते हैं और अक्सर बीवी की वजह से। देखो पहला फ़ित्ना हज़रत आदम पर भी औरत ही की वजह से आया था। हज़रत मूसा के मुक़ाबले में बलअम का ईमान जो नष्ट किया गया असल में इस की वजह भी तौरात से यही मालूम होता है कि बलअम की औरत को इस बादशाह ने कुछ ज़ेवर दिखा कर लालच दे दिया था और फिर औरत ने बलअम को हज़रत मूसा पर बददुआ करने के लिए उकसाया था। अत: उनकी वजह से भी अक्सर इन्सान पर भयंकर मसीबतें आ जाया करते हैं तो उनके सुधार की तरफ़ भी पूरा ध्यान करना चाहिए और उनके लिए भी दुआएं करते रहना चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ139)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी हालतों में पाक तबदीलीयां पैदा करने वाले हूँ। अपनी नमाज़ों को क़ायम कर के फिर उन्हें उच्च स्तर तक ले जानेवाले हूँ। अपने मालों को भी पाक करने वाले हूँ। अपने अख़लाक़ उच्च करने वाले हूँ। नेकियों को करने वाले और फैलाने वाले हूँ। बुराईयों से रुकने वाले और बुराईयों से अपनी नस्लों को भी रोकने वाले हूँ। और फिर अपने माहौल को भी रोकने वाले हूँ। मस्जिदों की तामीर के साथ इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम इस देश के शहरियों तक पहुंचाने वाले हूँ और उन्हें एक ख़ुदा का इबादत करने वाला बनाने वाले हों और यह उसी अवस्था में हो सकता है कि जब हम अपने अंदर भी उच्च तबदीलियां पैदा करें। अल्लाह तआला उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अब इस मस्जिद के कुछ कवाइफ़ भी वर्णन कर देता हूँ। यहां उस जगह का नाम तो हमने 'महदी आबाद रखा हुआ है। नाहे (Nahe)गांव का नाम है जहां यह मस्जिद अब बनाई गई है। स्थानीय जमाअत तो यहां की थोड़ी सी है और यह जगह जो है यह खेती की ज़मीन थी जो1989 ई में,Nineteen eighty-nine मैं ख़रीदी गई थी। इस में कुछ हिस्सा खेती के लिए है जो जमाअत ने ठेके पर दिया हुआ है। यहां पहले जब जगह ली गई थी तो फ़ार्म हाऊस भी था ,बिल्डिंग भी थी। इस को बतौर मिशन हाऊस इस्तिमाल करने की इजाज़त भी मिल गई। फिर जो बड़ा हाल था इस में मस्जिद बनाने की इजाज़त भी मिल गई और वक़ार अमल के द्वारा ये सारे काम हुए। यह दो मंज़िला इमारत है। इस में एक मुरब्बी हाऊस भी है जो पहले बना हुआ था। फिर 2010 ई में इस कौंसल ने यहां की जो फ़ार्म वाली ज़मीन के एक हिस्से को रिहायशी क़रार दे दिया और इस तरह यहां बारह प्लाट भी घरों के बिना दिए गए और बाक़ायदा मस्जिद बनाने की भी इजाज़त मिल गई। और बारह प्लाटों में से दो जमाअत ने अपने लिए रखे हुए हैं। बाक़ी लोगों को बेच दिए और इस में से जो रक़म हासिल हुई या इस से पहले कौंसल ने जो ज़मीन वापस ली थी इस से जो रक़म हासिल हुई वो इस से तक़रीबन बल्कि ज़ाइद रक़म ही मिल गई जिस पर यह ज़मीन ख़रीदी गई थी। बहरहाल छ: सात साल पहले बल्कि आठ साल पहले उस की बुनियाद मैंने रखी थी और यह मस्जिद भी अब मुकम्मल हो रही है और मस्जिद जो है यह दो मंज़िला है। छत वाला हिस्सा उस का तीन सौ पचासी वर्ग मीटर है। 210 नमाज़ियों की गुंजाइश है। मस्जिद का ऊपर वाला हिस्सा मर्दाना है और निचले वाला हिस्सा औरतों के लिए बनाया गया है। वुज़ू और ग़ुस्लख़ाने इत्यादि की सुविधाएं हैं। तक़रीबन पाँच लाख साठ हज़ार यूरो में यह बनाई गई थी। इस में से दो लाख यूरो से कुछ ऊपर यहां के स्थानीय लोगों ने चंदा दिया है जो बाक़ी रक़म है वे सौ मस्जिदों की स्कीम में से अदा की गई थी। अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के मालों और नफ़सों में बरकत प्रदान फ़रमाए और इस मस्जिद की तामीर के बाद इबादत का हक़ पहले से बढ़कर अदा करने वाले हों।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल15 नवम्बर2019 पृष्ठ 5 से 9)

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

बयान करना बहुत मुश्किल है।

*केरला इंडिया से आने वाले एक नौजवान अब्दुल कबीर आदिल साहिब कहने लगे कि हुज़ूर अनवर से मिलकर मेरी हालत बिल्कुल बदल गई है। अब में पहले वाला इन्सान नहीं रहा। मैं अब बदल चुका हूँ और अब मैं नेकियों में आगे बढ़ूँगा

असद बशीर घुमन साहिब जो मूसे वाला पाकिस्तान से आए थे कहने लगे कि मैं बहुत ख़ुशनसीब शख़्स हूँ कि आज ज़िन्दगी में पहली बार अपने आक़ा को ना सिर्फ क़रीब से देखा बल्कि हाथ मिलाने की सौभाग्य भी मिला। उनकी आँखों से आँसू जारी थे। कहने लगे कि आज मुझे नई ज़िन्दगी मिली है।

*चक नंबर 61 फैसलाबाद से आने वाले एक नौजवान एहसान अहमद साहिब ने ब्यान किया कि इस वक़्त मेरी भावनाएं कंट्रोल में नहीं हैं। जैसे ही मैं हुज़ूर अनवर के क़रीब पहुंचा तो मैं इस दुनिया में नहीं था। एक दूसरी दुनिया में जा चुका था।

*अहमद नगर पाकिस्तान से आने वाले एक नौजवान वहीद अहमद साहिब कहने लगे कि मुझमें उस वक़्त बात करने की हिम्मत नहीं। हुज़ूर अनवर के सामने मेरी यह हालत थी कि मुझसे बात नहीं हो रही थी और मुझ से बावजूद कोशिश के बोला नहीं जा रहा था। मैं अपने आपको ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि अपने प्यारे आक़ा से ज़िन्दगी में पहली बार मिला हूँ।

*रब्वह से आने वाले एक नौजवान कलीम अहमद साहिब ने बयान किया कि जब मैं हुज़ूर अनवर के क़रीब पहुंचा तो मुझे यह अजीब एहसास हुआ कि मैं इस दुनिया से कट चुका हूँ और एक दूसरी रुहानी दुनिया में हूँ। अब मैं अपने अंदर एक नुमायां तबदीली महसूस करता हूँ।

*इस्लामाबाद से आने वाले एक दोस्त अरशद मुस्लिम साहिब कहते हैं कि मैं हुज़ूर अनवर को ख़्वाब में देखा करता था। आज मेरे ख़्वाब पूरे हो गए हैं और मैंने अपनी आँखों से अपने सामने हुज़ूर अनवर को देख लिया है और हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाया है। *कराची से आने वाले नौजवान अहमद मुइज़ हाश्मी साहिब ने बयान किया कि पहले मैं हुज़ूर अनवर को टीवी पर देखा करता था। आज मैंने ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर को अपने सामने देखा है। ख़लीफ़ा वक़्त को मिलना बहुत बड़ा इनाम है। मैंने ख़लीफ़ा वक़्त का हाथ चूमा, बरकतें प्राप्त कीं। मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ।

*रब्वह पाकिस्तान से आने वाले एक नौजवान सय्यद मुसव्विर अहमद साहिब ने अपने भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा कि मेरी ज़िन्दगी में किसी भी ख़लीफतुल मसीह से आज मेरी पहली मुलाक़ात थी। मेरी ज़िन्दगी की सिर्फ एक ही इच्छा थी कि हुज़ूर अनवर से ज़िन्दगी में मुलाक़ात नसीब हो जाएगी। आज अल्लाह तआला ने मेरी यह इच्छा पूरी कर दी है।

*ताहिर आबाद रब्वह से आने वाले एक दोस्त तनवीर अहमद साहिब कहते हैं कि मेरे लिए अपने भावनाएं ब्यान करना मुश्किल है। मैं कुछ ज़्यादा कह नहीं सकता। सिर्फ इतना कहना चाहताहों कि मेरे अंदर रूहानियत आ रही है। मैं अंदर से बदल चुका हूँ।

*मंडी बहा-उद्दीन से आने वाले एक ख़ादिम वलीद अहमद ताहिर साहिब कहते हैं कि हुज़ूर अनवर को अपने क़रीब देख कर और हुज़ूर अनवर से हाथ मिला कर मेरी ज़िन्दगी का मक़सद पूरा हो गया है। मैंने अपनी ज़िन्दगी में हुज़ूर अनवर से मिल लिया है। मेरे ज़िन्दा रहने की इच्छा पूरी हो गई है।

*लाहौर से आने वाले एक नौजवान मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब ने कहा कि आज दिल ख़ुदा की हमद से भर गया है। ख़ुदा तआला ने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात की तौफ़ीक़ दे दी है। ख़ुदा तआला मेरे बच्चों को भी हमेशा ख़िलाफ़त से जुड़ा रखे। बस यही ज़िन्दगी है। इसके सिवा कुछ भी नहीं।

*भेराह ज़िला सरगोधा से एक नौजवान रिज़वान हैदर साहिब ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। महोदय कहने लगे कि मैं कुछ बता नहीं सकता। बस सिर्फ इतना कहूंगा का आज मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ। मुझे आज बहुत सुकून और इतमीनान प्राप्त हुआ है। आज मेरी ज़िन्दगी का सबसे बेहतरीन दिन था।

*आख़िर पर चार ऐसे लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया जो बड़ी उम्र के थे तथा अपाहिज थे और कुर्सीयों पर बैठे हुए थे। हुज़ूर अनवर कृपा करते हुए इन लोगों के पास तशरीफ़ लाए, उनका हाल पूछा और सभी को मुलाक़ात का अवसर से नवाज़ा।

इन लोगों से मुलाक़ात का यह प्रोग्राम11 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज सुबह के इस सैशन में 62 फ़ैमिलीज़ के 269 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रो को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ अमरीका की 35 विभिन्न जमाअतों और इलाक़ों से आई थीं। कुछ दूर की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ सैंकड़ों मील की दूरी बारह से तेरह घंटों में तय करके अपने प्यारे आक़ा की मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सौभाग्य भी पाई।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के दौरान अमरीका के इस सफ़र में फ़ैमिली मुलाक़ातों का यह आख़री सैशन था। मुलाक़ात के विभाग के इंचार्ज आदरणीय शमशाद अहमद नासिर साहिब मुबल्लिग़ Dayton अमरीका बताते हैं कि जैसे ही हुज़ूर अनवर के अमरीका के दौरा की सूचना मिली तो जमाअत के लोगों के अंदर एक ख़ुशी तथा आन्नद की लहर दौड़ गई और मुलाक़ातों के लिए फ़ार्मज़ आने का तानता बंध गया। दस हज़ार से अधिक अहमदी लोगों ने अपनी फ़ैमिलीज़ के साथ और व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात के लिए फ़ार्म जमा करवाए।

औरत और मर्द फ़ार्म जमा करवाने के बाद बार-बार इस बात का प्रकट कर रहे थे कि जिस तरह भी मुम्किन हो सिर्फ एक मिनट के लिए ही हमारी मुलाक़ात करवा दी जाए। कुछ औरत ने रो-रो कर इस बात का प्रकट किया कि जब से हमने अपने बच्चों को बताया है कि हुज़ूर अनवर अमरीका तशरीफ़ ला रहे हैं तो उनके अंदर एक अजीब excitement है। देश के कोने कोने से मुलाक़ात की दरख़ास्तें आईं।

इस बार जमाअत के प्रबन्धकों ने यही फ़ैसला किया कि सिर्फ उन लोगों और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ात होगी जिनकी ज़िन्दगी में कभी पहले हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात नहीं हुई। अत: हुज़ूर अनवर के इस सफ़र के दौरान मुलाक़ातों के कल 12 सैशन मस्जिद बैतुल आफ़ियत (फ़िलाडेल्फ़िया) , मस्जिद बैतुल-समीअ हीवसटन और मस्जिद बैयतुर्रहमान (वाशिंगटन) में हुए। इन बारे सैशन में 757 फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और मर्दों औरत के व्यक्तिगत ग्रुपस को शामिल करके 3970 से अधिक लोगों ने अपने आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने प्यारे आका के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

आज की फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम 2 बजकर 10 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां व्यक्तिगत तौर पर लजना के एक ग्रुप ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस ग्रुप में शामिल औरत की संख्या 128 थी। यह मुलाक़ात 2 बजकर 5 मिनट तक जारी थी।

नेशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.ऐस.ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मीटिंग

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए जहां नेशनल मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया , यू.ऐस.ए की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई ।

नवम्बर 2018 ई में ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.ऐस. ए की नई टर्म शुरू हुई है और नए सदर का तक़र्रुर हुआ है। इस हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.ऐस. ए से पूछा कि ज़्यादा-तर आमला के मेम्बरों वही हैं जो पहले थे? क्या आप ने आमिला के मेम्बरों को उनकी डयूटियों के बारे में से बता दिया है? इस पर सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमिदया ने निवेदन किया कि जी हुज़ूर। आमिला के मेम्बरों को उनके फ़राइज़ के बारे में बताया जा चुका है।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नायब सदरों, मुआविन सदरों से परिचय प्राप्त किया और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि बैठने की तर्तीब इस तरह होनी चाहिए कि सदर के बाद मोतमिद बैठा हो और फिर सारी महतममीन और फिर मुआविन सदर और इस के बाद एक तरफ़ नायब सदरों को बिठाना चाहिए।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुहतमिम इतफ़ाल ने निवेदन किया कि इतफ़ाल की कुल तजनीद 1240 है। इतफ़ाल की तरबियत के बारे में से हमारा फ़ोकस नेशनल इज्तिमा है और फिर रीजनल इतफ़ाल rallies का आयोजन है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा: लोकल सतह पर तरबियती क्लासों का आयोजन करते हैं ? उनमें कितने इतफ़ाल शामिल होते हैं? इस पर मुहतमिम इतफ़ाल ने निवेदन किया कि लगभग 600 इतफ़ाल इन क्लासों में शामिल होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब इतफ़ाल ख़ुद्दामुल अहमिदया में जाते हैं तो इतने काम करने वाले नहीं होते। अगर इतफ़ाल की ठीक तरह से तरबियत हो और उनकी ट्रेनिंग हो तो फिर उनकी ख़ुद्दामुल अहमिदया में

जाकर जमाअत का activities में दिलचस्पी ख़त्म नहीं होती।

*इसके बाद मोतमिद साहिब ने निवेदन किया कि मैं पिछले साल ऐडीशनल मोतमिद के तौर पर काम कर रहा था और इस साल मोतमिद की ज़िम्मेदारी मिली है। हमारी कुल मज्लिसें 72 हैं जबकि पिछले साल 74थीं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:आपकी मज्लिसें ज़्यादा होने की बजाय कम क्यों हो रही हैं? कुछ मज्लिसों को मुदग़म किया है? इस पर मोतमिद साहिब ने निवेदन किया कि हमने कुछ मज्लिसों को मुदग़म किया है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि सारी मज्लिसें अपनी रिपोर्टस भिजवाती हैं? सारी मज्लिसें काम करने वाली भी हैं? इस पर मोतमिद साहिब ने निवेदन किया कि अल्हम्दुलिल्लाह सारी मज्लिसों की तरफ़ से सौ प्रतिशत रिपोर्टस प्राप्त होती रही हैं। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी सारे मुहतममीन , क्षेत्रीय क़ाइदीन और भूतपूर्व मुहतममीन से परिचय प्राप्त किया।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सारे महतममीन को इरशाद फ़रमाया कि वे आगे आकर बैठें। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:आप लोगों को ख़ुद्दामुल अहमदिया में काम करते हुए अब काफ़ी समय हो गया है और आप सबको इलम है कि अपनी ज़िम्मेदारीयों को किस तरह अदा करना है। सबसे पहली चीज़ तो यह है कि अपना सालाना प्रोग्राम या मन्सूबा तय्यार करें। अगर तो भूतपूर्व मुहतममीन के पास कोई मन्सूबा इत्यादि पड़ा हुआ है तो उन्हें चाहिए कि वे नए मुहतममीन को दे दें। अगर तो भूतपूर्व मुहतममीन की तरफ़ से नियमित कोई मन्सूबा है तो ठीक है वर्ना आप लोग ख़ुद सारे साल का प्लान बनाएँ। और यह प्लान इरादे वाला होना चाहिए। मैंने देखा है कि ख़ुद्दामु अहमिदयह के नेशनल इज्तिमा में एक हज़ार से अधिक ख़ुद्दाम भी शामिल नहीं हुए। रीजनल लेवल के इज्तिमाओं का तो मुझे इलम नहीं ।

इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि क्या आप लोगों के वैस्ट कोस्ट और ईस्ट कोस्ट के रीजनल इज्तिमाआ होते हैं? इस पर सदर साहिब ने निवेदन किया कि पहले हमारे वैस्ट कोस्ट और ईस्ट कोस्ट के इज्तिमा होते थे लेकिन अब नहीं होते बल्कि अब मज्लिसों को 12 रीजनज़ में बांटा गया है और हर रीजन अपना इज्तिमा आयोजित करती है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर एक रीजनल क़ायद ने निवेदन किया कि इन के रीजन में ख़ुद्दाम की तजनीद 370 है जिस में से 90 ख़ुद्दाम रीजनल इज्तिमा में शामिल हुए थे। इसी तरह एक और ख़ादिम ने निवेदन किया कि इन के रीजन की इतफ़ाल और ख़ुद्दाम की कुल संख्या 454 है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब ख़ुद्दाम और इतफ़ाल की इकट्ठी तजनीद बताते हैं तो मिल जाती है। आपके नाज़िम इतफ़ाल हैं वह इतफ़ाल की तजनीद बता सकते हैं। आप इतफ़ालुल अहमिदया के क़ायद नहीं बल्कि ख़ुद्दामुल अहमिदया के क़ायद हैं इसलिए अलग अलग साफ़ और स्पष्ट मालूमात दिया करें । इस पर क़ायद साहिब ने निवेदन किया कि हमारे रीजन में कुल 340 ख़ुद्दाम और 114 इतफ़ाल हैं। 340 मैं से 80 ख़ुद्दाम इज्तिमा पर हाज़िर हुए थे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह तो बमुश्किल चौथा हिस्सा बनता है। रीजनल लेवल पर भी नेशनल लेवल वाला हाल है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने यह भी देखा है कि आपके प्रोग्रामों में outdoor activities और खेलों के प्रोग्रामों इत्यादि पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है । इज्तिमा के अवसर पर सत्तर से इसी प्रतिशत प्रोग्राम धार्मिक तथा तरबियती होने चाहिऐं जिनमें जनरल नॉलिज, मज़हबी तथा दीनी उलूम, तिलावत क़ुरआन करीम का मुक़ाबला, अज़ान का मुक़ाबला और इस तरह कई अन्य सवाल तथा जवाब के प्रोग्राम हो सकते हैं। अगले साल के लिए इसी तर्ज़ पर प्रोग्राम बनाएँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने आपके सदर साहिब से कहा है कि वह पूरे साल के लिए कोई theme सोच कर बताएं । मैंने उन्हें कहा कि तीन विषय बताएं उनमें से जो theme भी फाईनल होगा उसी पर आप सबने काम करना है। साल भर आपके प्रोग्राम इसी theme के अनुसार होने चाहिऐं और आपके नेशनल और रीजनल इज्तिमाओं के प्रोग्राम भी इसी theme के अनुसार हूँ। ताकि साल बाद आपको इलम हो कि आपने इस साल क्या कुछ प्राप्त किया है या कहाँ तक इस theme के मक़सद को प्राप्त करने की कोशिश की है। इंशा अल्लाह कुछ दिनों तक आपको इसके बारे में इलम हो जाएगा। जैसे ही आपको theme का पता चले आप उस के अनुसार काम शुरू कर दें। महतममीन को भी चाहिए कि वे अगले दो हफ़्तों में अपने प्लान पूर्ण करके सदर साहिब के माध्यम से मुझे भिजवाएं ताकि मुझे भी इलम हो कि आप लोगों ने किस क़दर भरपूर मंसूबा तैय्यार किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:आप लोगों को अब पहले से बढ़कर काम करने वाला होना है बल्कि हर साल पहले से ज़्यादा काम करने वाला होना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा कि आपसे जो पहले थे उन्होंने काम नहीं किए। उन्होंने भी काम किया और बड़ी मेहनत से काम किया है। लेकिन हर साल हमारा क़दम आगे बढ़ना चाहिए और हमारी तरक़्क़ी की रफ़्तार पिछले साल की तुलना में ज़्यादा बेहतर होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मोतमिद साहिब यह नोट कर लें। यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि हर मुहतमिम अपना प्लान बनाकर जमा करवाए और फिर यह प्लान मुझे मन्ज़ूरी के लिए भिजवाए जाएं। अगर मन्ज़ूरी होने में कुछ दिन या कुछ हफ़्ते लग जाएं तो भी महतममीन अपने अपने प्लान्ज़ के अनुसार काम करना शुरू कर दें। जो भी महतममीन प्लान भिजवाएंगे मैं उनमें किसी किस्म की कमी नहीं करूँगा लेकिन हो सकता है कुछ चीज़ों की वृद्धि कर दूं। इसलिए महतममीन जो भी प्लान बनाएँ फ़ौरन इस पर अनुकरण भी शुरू कर दें लेकिन इसके साथ साथ नियमित मन्ज़ूरी भी प्राप्त करें। फिर हर त्रै मासिक रिपोर्ट में इसका ज़िक्र करें कि इस प्लान में कितना काम हो चुका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अब नई आमिला बनी है। इसलिए चाहिए कि नई भावना और जोश के साथ काम करें। रीजनल क़ाइदीन को भी चाहिए कि वे भी अब नई भावना के साथ काम का आरम्भ करें। जब आप लोग अपना प्लान बना लें तो फ़ौरन स्थानीय मज्लिसों के क़ाइदीन को भिजवाएं । इसी तरह मोतमिद साहिब की ज़िम्मेदारी है कि वह सारी नाज़िमीन को यह प्लान भिजवाएं और फिर देखें कि इस पर किस हद तक अनुकरण हो रहा है और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कितनी कोशिश की जा रही है? लोकल और रीजनल स्तर के इज्तिमाओं पर भी इस theme को अपना लक्ष्य बनाएँ। मुआविन सदरान और नायब सदरान जिनके ज़िम्मा विभिन्न विभागों में लगाए जाऐंगे उन्हें भी चाहिए वे अपने अपने विभाग को देखें और इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि उनके विभागों के मन्सूबों पर अनुकरण हो रहा है और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए भरपूर कोशिशें भी जारी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर आप कुछ करना चाहते हैं और दुनिया को तबदील करना चाहते हैं और आपका नारा यह है कि क़ौमों की इस्लाह नौजवानों की इस्लाह के बिना मुम्किन नहीं हो सकती तो फिर आपको उस के लिए अनथक मेहनत करनी पड़ेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: देखते रहें कि साल भर में हमने क्या प्राप्त किया है। भूतपूर्व महतममीन की कमज़ोरियाँ और ख़ामियाँ तलाश करने की बजाय यह देखें कि हम अपने कामों मैं किस तरह बेहतरी ला सकते हैं। मैंने सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमिदया को तफ़सीली हिदायतें दी हैं वे यह हिदायतें आप सब तक पहुंचा देंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह आपको भूतपूर्व सदर ख़ुद्दामुल अहमिदया बिलाल राना साहिब का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उन्होंने अपनी सलाहियतों और क़ाबिलियतों के अनुसार पिछले छ: साल निहायत मेहनत से काम किया है। इसी तरह इन सारी महतममीन और नायब सदरान का भी शुक्रिया अदा करें जो इस साल ख़ुद्दामुल अहमिदया से रुख़सत हो रहे हैं। आप उन के लिए अलविदाइया का प्रोग्राम भी आयोजित कर सकते हैं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुहतमिम माल ने निवेदन किया कि उनका बजट 6 लाख 43 हज़ार 397 डॉलरज़ है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लोग अपनी तीस से चालीस साल की उम्र में अपने कामों इत्यादि के बारे में उरूज पर होते हैं या कम से कम इन की आय काफ़ी ज़्यादा होती है इसलिए अगर सारे ख़ुद्दाम स्तर के अनुसार चन्दा की अदायगी करें तो आपका यह बजट दोगुना हो सकता है।

इस पर मुहतमिम माल ने निवेदन किया कि हमारा अन्दाज़ा है कि अगर सारी ख़ुद्दाम अपनी आने के अनुसार चन्दा की अदायगी करें तो दोगुना से भी ज़्यादा इज़ाफ़ा हो सकता है। शायद हम दो मिलियन तक पहुंच जाएं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप दो मिलियन का कह रहे हैं। चलें आप इस साल के लिए अपना टार्गेट एक मिलियन का रख लें। लेकिन ख़ुद्दाम को इस बात का एहसास दिलाना चाहिए कि वे कोई टैक्स इत्यादि नहीं अदा कर रहे बल्कि यह चन्दा उन की अपनी भलाई के लिए है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर सेक्रेट्री तरबियत काम करने वाला हो औरर इसी तरह स्थानीय सतह पर नाज़िमीन तरबियत काम करने वाले हों और ठीक तरह से ख़ुद्दाम की तरबियत करें और उन्हें उनकी ज़िम्मेदारीयों की तरफ़ ध्यान दिलाएँ तो इस तरह वे माल और दूसरे विभागों में की भी मदद कर सकते हैं। अल्लाह तआला पर ईमान रखने के बाद नमाज़ का हुक्म है और

इसके बाद तीसरे नंबर पर क़ुर्बानी करने का हुक्म आता है कि अल्लाह तआला ने आपको जिन नेअमतों से नवाज़ा है उनमें से क़ुर्बानी करें।

*इसके बाद मुहतमिम माल ने निवेदन किया कि जब हम इन्कम बजट इकट्ठा करते हैं तो क़ाइदीन ऐसे ख़ुद्दाम जो उनके साथ सम्पर्क में नहीं होते उनके नामों के आगे सिफ़र लिख देते हैं और उन का कहना होता है कि चूँकि उनसे सम्पर्क नहीं है इसलिए उनका बजट नहीं दे रहे। क्या हम ऐसे ख़ुद्दाम जिनका सम्पर्क बहुत कम है उन के बजट में सिफ़र की बजाय 60 डॉलरज़ जो कम से कम स्तर है वह लिख सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह नाज़िमीन तरबियत का फ़र्ज़ है वे ऐसे ख़ुद्दाम के लिए कोशिश करें। अगर नाज़िम तरबियत की यह भावना है और इस का ऐसे ख़ुद्दाम के साथ ज़ाती सम्पर्क है तो फिर वे मस्जिद आ जाऐंगे। जब ऐसे ख़ुद्दाम मस्जिद आने लग जाएं और जमाअत का प्रोग्रामों में शामिल होना शुरू कर दें तो उनका नाज़िम माल के साथ ख़ुद ही सम्पर्क हो जाता है। अगर वे कहते हैं वे अपनी आय के अनुसार चन्दा नहीं दे सकते बल्कि वे सिर्फ़ इतनी रक़म अदा कर सकते हैं तो फिर जितनी रक़म वे दें वे ले लिया करें। यह ज़रूरी नहीं कि ऐसे ख़ुद्दाम को मजबूर किया जाए कि वे लाज़िमी अपनी आय के अनुसार चन्दा दें। शुरू में जो भी चन्दा वे अदा करें वे ले लिया करें चाहे वे ख़ुद्दामुल अहमिदया का चन्दा हो, तहरीक जदीद का हो या वक़्फ़ जदीद का हो। यह कुछ लाज़िमी नहीं हैं। सदर ख़ुद्दामुल अहमिदया इस चन्दा में किसी हद तक छूट दे सकते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुहतमिम माल ने निवेदन किया कि इन के पास उस वक़्त डैटा नहीं है कि कितने कमाने वाले चन्दा अदा कर रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर स्थानीय सतह पर नाज़िमीन तजनीद काम करने वाले हों तो उन्हें पता होता है कि उनकी मज्लिस में कुल इतने ख़ुद्दाम हैं और उनमें से इतने कमाते हैं और इतने नहीं कमाते। लेकिन इस का अर्थ यह नहीं है कि आपको पका पकाया मिल जाए। हर नाज़िम माल या हर क़ायद को भी चाहिए कि वे हर ख़ादिम के साथ घर जाकर सम्पर्क करें। यहां अमरीका में जमाअत की संख्या लाखों में तो नहीं है। हर मज्लिस में सौ से ज़्यादा संख्या नहीं होती। पूरे रीजन में 400 की संख्या बता रहे थे।अगर आप कहते हैं चूँकि इतनी ज़्यादा संख्या है इसलिए सम्पर्क नहीं हो सकता तो यह झूटे बहाने हैं। अगर तो संख्या कम है तो फिर प्रत्येक के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क करना मुश्किल काम नहीं है। आपको अपने के बारे में नाज़िमीन को काम करने वाला करना पड़ेगा। सिर्फ माल विभाग को नहीं बल्कि हर विभाग के मुहतमिम को अपने अपने विभाग के नाज़िमीन को काम करने वाला करना पड़ेगा। अगर स्थानीय सतह पर सारे नाज़िमीन काम करने वाले हो जाएं तो आपको ख़ुद ही एक बड़ी तबदीली नज़राना शुरू हो जाएगी।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सदर मजलिस ने निवेदन किया कि वे रिपोर्टों पर तबसरा करके महतममीन को भिजवाते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सदर मजलिस का हर स्थानीय मजलिस के क़ायद के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क भी होना चाहिए। इसलिए अगर हर महीना नहीं तो कम से कम दो महीना में एक बार स्थानीय मजलिसों की रिपोर्टों पर आपका तबसरा होना चाहिए। और सम्बन्धित महतममीन अपने अपने विभाग की रिपोर्ट पर हर महीने तबसरा भिजवाएं। इसी तरह मोतमिद को चाहिए कि वह हर महीने क़ाइदीन और रीजनल क़ाइदीन की रिपोर्टस पर तबसरा करके भिजवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मोतमिद की ज़िम्मेदारी है कि वे दफ़्तर में आए और दफ़्तर में बैठ कर ख़ुद्दाम के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क करे। आपके पास प्रिंटिंग मशीन होनी चाहिए और सारा रिकार्ड प्रिंट शक्ल में दफ़्तर में मौजूद होना चाहिए।

*मोतमिद ने निवेदन किया कि हमारी सारी रिपोर्टस Google Drives पर होती हैं और वहीं से हम उसे access कर लेते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ऐसी चीज़ों पर पूर्ण भरोसा ना क्या करें। आपके पास प्रिंट शक्ल में रिकार्ड होना चाहिए। अपना रिकार्ड ज़्यादा समय के लिए ऑनलाइन ना रखा करें। जब आप यह डैटा USB में डाल लेते हैं या प्रिंट कर लेते हैं तो आन लाईन डैटा ख़त्म कर दिया करें। कम से कम माल विभाग के बारे में जो भी डैटा है वह ज़रूर delete कर दिया करें। इसी तरह ख़ुद्दाम की अगर ज़ाती मालूमात हैं तो वह भी ख़त्म कर दिया करें। अमरीका में आप लोग बहुत ज़्यादा इलैक्ट्रॉनिक टैक्नोलोजी पर भरोसा करते हैं।

*एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि पिछले दस साल का चन्दा का डेटा ऑनलाइन ही है। हमारा सिस्टम ऑनलाइन डेटाबेस है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सिस्टम बे-शक ऑनलाइन हो लेकिन पुराना रिकार्ड ऑनलाइन नहीं रखना। इसको कहीं महफ़ूज़ करें। अगर ख़ुदा-न-चाहे यह डैटा hack हो जाता है तो आप के पास तो कुछ नहीं रहेगा। इस पर मुआविन सदर ने निवेदन किया कि इस वक़्त हमारे पास डैटा को backup करने की सुविधा उपलब्ध नहीं है। हमारा माल का सिस्टम काफ़ी पुराना है , हम ने उस को अपडेट करने की कोशिश की थी लेकिन वक़्त नहीं मिला।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि जमाअत का अपना सिस्टम है और ऑनलाइन नहीं है। वह हर महीने डैटा का बैक करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर जमाअत अपना डैटा इस तरह से बैक अप कर रही है और उसको महफ़ूज़ कर रही है तो फिर आप लोग क्यों नहीं कर रहे? पहले तो AIMS का सारा डैटा मर्कज़ भिजवाया जाता था लेकिन अब सारा डैटा तो नहीं भिजवाया जाता लेकिन बजट और खर्चों इत्यादि का रिकार्ड भिजवाया जाता है। इस तरह से वह मर्कज़ में भी महफ़ूज़ हो रहा है। लेकिन लोगों का ज़ाती डैटा यहां ही महफ़ूज़ होना चाहिए।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुहतमिम माल को मुख़ातब होते हुए फ़रमाया: अगर आप इस साल 35 प्रतिशत का इज़ाफ़ा कर लेते हैं तो आपका एक मिलियन का टार्गेट पूरा हो जाएगा। जो लोग ज़्यादा अमीर नहीं हैं और समझते हैं कि अपनी आय के अनुसार चन्दा अदा नहीं कर सकते तो आप उन्हें छूट दे सकते हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वो लोग जो सामर्थय हैं उन्हें भी छूट दे दी जाए। सामर्थय वाले ख़ुद्दाम को चाहिए कि वह अपनी आय के अनुसार चन्दा की अदायगी करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आपका काम है कि ख़ुद्दाम को चन्दे के महत्व के बारे में बताएं। मुहतमिम तरबियत को चाहिए कि वह इस सिलसिला में माल विभाग की मदद करे। यू.के में भी कुछ ख़ुद्दाम थे जिन्होंने कभी चन्दा की अदायगी नहीं की। ना सिर्फ मजलिस बल्कि जमाअत का चन्दा भी अदा नहीं करते थे। लेकिन इज्तिमाओं के दौरान discussion sessions और सवाल तथा जवाब की मज्लिसों के द्वारा उन्हें चन्दा के महत्व का एहसास हुआ और उन्हें अपने चन्दों के इस्तेमाल के बारे में पता चला तो काफ़ी ख़ुद्दाम ने अपने आप अपनी मज्लिसों के नाज़िमीन माल के साथ सम्पर्क करके चन्दा की अदायगी की और उन्होंने यह स्वीकार किया कि हम ग़लत थे और अब हमें एहसास हुआ है कि यह चन्दा कहाँ इस्तेमाल हो रहा है। पहले वे समझते थे कि सिर्फ जमाअत का ओहदेदारों की भरपूर दावतों पर ही यह चन्दा प्रयोग होता है। उन्हें पता ही नहीं था कि चन्दा कहाँ कहाँ प्रयोग हो रहा था। इसलिए अगर चन्दे के प्रयोग का उन्हें पता लग जाए तो वे अदायगी भी कर देते हैं। इस तरह इस से ना सिर्फ ख़ुद्दामुल अहमिदया के चन्दा में बेहतरी आएगी बल्कि जमाअत के चन्दों में भी इज़ाफ़ा होगा।

*मुहतमिम तब्लीग़ ने निवेदन किया कि जब माली क़ुर्बानी के समस्याएं सामने आती हैं तो क्या ख़ुद्दामुल अहमिदया को चाहिए कि वे ऐसे ख़ुद्दाम को पहले जमाअत का चन्दा अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाएँ और फिर ख़ुद्दामुल अहमिदया के चन्दा की तरफ़ ध्यान दिलाया जाए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप उन्हें जमाअत का चन्दा की अदायगी की तरफ़ भी ज़रूर ध्यान दिलाएँ लेकिन अगर वे कहते हैं कि आप फ़िलहाल हमसे सिर्फ़ ख़ुद्दामुल अहमिदया का चन्दा ही ले लें तो आप वे चन्दा ले लिया करें। उन्हें क़रीब लाने के लिए और उन्हें माली क़ुर्बानी का एहसास दिलाने के लिए शुरू में वे जिस मद में भी चन्दा दें वे ले लिया करें। नौ मुबाईन या कमज़ोर अहमदी हैं उन के लिए भी यही तरीक़ा है कि अगर वे सिर्फ़ तहरीक जदीद का ही चन्दा अदा करते हैं तो ठीक है। लेकिन उन्हें जमाअत के चन्दा के महत्व का एहसास ज़रूर दिलाएँ। हाँ अगर कोई ख़ादिम अपनी आय के अनुसार मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया का चन्दा अदा कर रहा है तो फिर ऐसे ख़ुद्दाम को बताएं कि उनकी पहली तर्जीह लाज़िमी चन्दा होनी चाहिए। इस सूरत में मुहतमिम माल या सदर मजलिस फ़ैसला कर सकते हैं कि वह चन्दा लाज़िमी चन्दा के तौर पर क़बूल करना है या फिर मज्लिस के चन्दा के तौर पर। बहरहाल ऐसे सारे ख़ुद्दाम जो अपनी आय के अनुसार ख़ुद्दामुल अहमिदया का चन्दा अदा कर रहे हैं और सारे क़वाइद तथा नियमों पर अनुकरण कर रहे हैं तो उन्हें कहें कि जमाअत का चन्दा अदा करें।

*इसके बाद मुहतमिम तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हमें जमाअत का प्रोग्रामों को किस हद तक follow करना चाहिए। अगर जमाअत का कोई तब्लीग़ी प्रोग्राम हो रहे हैं तो क्या हमें इन प्रोग्रामों को फॉलो करना चाहिए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप लोगों को अपने प्रोग्राम आयोजित करने चाहिऐं लेकिन अगर कोई जमाअत का प्रोग्राम हो तो ज़ैली तन्ज़ीमों को चाहिए कि वह जमाअत के प्रोग्रामों में भी भरपूर सहयोग करें। ज़ेली तंज़ीमें भी जमाअत का हिस्सा होती हैं। इसलिए जमाअत अगर कोई प्रोग्राम बनाती है तो सहयोग करना चाहिए और उन प्रोग्रामों में भरपूर शिरकत होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आपका जो भी सालाना

प्लान है या प्रोग्राम हैं उनकी सदर साहिब की सिफ़ारिश के साथ मुझ से आज्ञा ले लें और फिर उन पर अनुकरण करवाएं हो। लेकिन जहां कहीं भी जमाअत का प्रोग्राम और ज़ेली तंज़ीम के प्रोग्राम का आपस में clash होतो वहां जमाअत का प्रोग्राम को तर्जीह मिलनी चाहिए। ख़ुद्दामुल अहमिदया और अन्य ज़ेली तंज़ीमें जमाअत का प्रोग्रामों में सहायक और मददगार होनी चाहिऐं।

*मुहतमिम तालीम ने निवेदन किया कि जमाअत का तौर पर ताहिर एकेडेमी में बच्चों की धार्मिक कक्षाओं का आयोजन होता है और उनके इमतिहान भी होते हैं। तो क्या हमें अतफ़ालुल अहमिदया के अलग पर्चे हल करवाने चाहिऐं या जो जमाअत का इमतिहान होता है वही काफ़ी होता है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल विभिन्न किस्म के निसाब और प्रोग्राम हैं जैसे वक़्फ़ नौ के विभिन्न प्रोग्राम होते हैं, ख़ुद्दामुल अहमिदया के अलग प्रोग्राम होते हैं और जमाअत के अपने प्रोग्राम होते हैं।

क़ायद उमूमी साहिब ने निवेदन किया कि सारी मज्लिसों में विभिन्न प्रोग्रामों का आयोजन होता है और उसका ज़िक्र मज्लिसों की रिपोर्ट में होता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर तो जमाअत ताहिर एकेडेमी को चला रही है तो लजना इमाउल्लाह और ख़ुद्दामुल अहमिदया को चाहिए कि वह जमाअत के साथ सहयोग करें। लेकिन इस एकेडेमी में वक़्फ़ नौ के निसाब की तर्ज़ पर नियमित एक निसाब होना चाहिए। इस निसाब के लिए अगर ख़ुद्दामुल अहमिदया या लजना इमाउल्लाह कुछ चीज़ें तजवीज़ करें तो उन को भी इस निसाब में शामिल किया जा सकता है। अब यू.के में भी और कुछ अन्य देशों में भी वक़्फ़ नौ निसाब की तर्ज़ पर ख़ुद्दामुल अहमिदया और लजना इमाउल्लाह अपना धार्मिक तथा तरबियती निसाब तय्यार करती हैं ताकि वाक़फ़ीन नौ के ज़हनों में यह ना आए कि वे कोई अलग चीज़ हैं या वे दूसरे बच्चों से ज़्यादा बेहतर हैं या विभिन्न हैं। इस के लिए नियमित एक जामा और प्रभावित करने वाला मन्सूबा बनाया जा सकता है।अगर जमाअत और ज़ेली तन्ज़ीमों के बीच सहयोग हो तो इस किस्म के प्रोग्राम बनाने में कोई हर्ज नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर जमाअत का सेक्रेटरी के साथ कोई मसला हो तो आप अमीर साहिब से बात कर सकते हैं। हम इसी सूरत में तरक़्क़ी कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते जब हमारे प्रोग्रामों में एक दूसरे के साथ भरपूर सहयोग हो। अगर कोई सहयोग नहीं करता तो आप सदर साहिब के माध्यम से अमीर साहिब तक रसाई करें और मसला का हल निकालें। अगर फिर भी मसला का हल नहीं निकलता तो फिर मुझे लिखें।

*एक आमिला मैंबर ने निवेदन किया कि हम साइक़ीन के निज़ाम का अमरीका में सही तरह किस तरह इतलाक़ कर सकते हैं? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अगर आप साइक़ीन के निज़ाम का इतलाक़ करें तो यह बहुत सहयोग करता है। अगर आप grass root level वाला निज़ाम अपनाएं तो आपको ख़ुद्दामुल अहमिदया के प्रोग्रामों में एक बहुत बड़ी तबदीली नज़र आएगी। अतफ़ालुल अहमिदया और ख़ुद्दामुल अहमिदया की हाज़िरी में भी इज़ाफ़ा होगा। जब मैं ख़ुद अतफ़ालुल अहमिदया में था तो मैं पहले साइक बना, उस के बाद मुंतज़िम इतफ़ाल का नायब और इसके बाद मुंतज़िम इतफ़ाल बना। फिर ज़ईम मज्लिस के तौर पर काम किया , फिर रब्वह में नाज़िम उमूमी के तौर पर काम किया फिर नेशनल लेवल पर मुहतमिम के तौर पर सेवा की। बहैसीयत एक आम तिफ़्ल के मेरी ट्रेनिंग का आरम्भ हो गया था। यह नहीं कि आपने ना कभी ख़ुद्दामुल अहमिदया की क्लास में हिस्सा लिया हो और ना ही किसी दूसरे तरबियती प्रोग्राम में हिस्सा लिया हो और एक दिन सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया आप को बुला कर कहें कि आपको अमुक विभाग का मुहतमिम बनाया जा रहा है। जब तक आपने grass root level पर ख़ुद अपनी ट्रेनिंग ना की हो उस वक़्त तक आपको इस ट्रेनिंग की इफ़ादीयत का पता नहीं चल सकता। इसलिए इस ट्रेनिंग का आरम्भ निहायत बुनियादी सतह से करें।

*एक आमिला मैंबर ने निवेदन किया कि स्थानीय मज्लिसों में हर महीना एक इजलास आम होता है। क्या हमें लोकल आमिला की भी एक मासिक मीटिंग करनी चाहिए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब मैं अपने क्षेत्र का ज़ईम था, रब्वा में क़ायद नहीं होते बल्कि ज़ुअमा होते हैं और मुहतमिम स्थानीय की आमिला में नाज़िमीन होते हैं। इसलिए ज़ुअमा की मुहतमिम स्थानीय के साथ मीटिंगज़ होती थीं और अब भी होती हैं। जहां तक मुम्किन हो और हालात इजाज़त दें मीटिंगज़ का आयोजन होताहै। रब्वा एक छोटा सा शहर है जहां 45 से 50 हज़ार अहमदी आबाद हैं और ख़ुद्दामुल अहमिदया की संख्या बारह, तेरह हज़ार होगी और 70 मज्लिसे हैं और हर मजलिस का अपना ज़ईम होता है जिसकी अपनी आमिला होती है और उनकी आमिला की हर महीने मीटिंग होती है। मुहतमिम स्थानीय ज़ुअमा के साथ अलग मीटिंग करता है और नाज़िमीन के साथ अलग मीटिंग करता है और फिर एक मीटिंग सारों की इकट्ठी भी होती है। इसलिए grass root level का जो क़ायद है या जो ज़ईम है वह महीना में दो बार मुहतमिम स्थानीय के साथ मीटिंग करता है। मुझे नहीं पता कि इस वक़्त क्या अवस्था है लेकिन जब मैं बतौर ज़ईम और नाज़िम के काम कर रहा था उस वक़्त तो यही तरीक़ा था। इसलिए नाज़िमीन और क़ाइदीन को चाहिए कि वह महीना में कम से कम एक मीटिंग ज़रूर किया करें। इसी तरह मुहतममीन को भी चाहिए कि वह भी महीना में एक मीटिंग ज़रूर किया करें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सदर मजलिस ने निवेदन किया कि आमिला की कान्फ्रैंस काल के द्वारा हर माह एक मीटिंग होती है जबकि तीन माह में एक मीटिंग ऐसी होती है जहां सारे मुहतममीन हाज़िर होते हैं। स्थानीय सतह पर भी स्थानीय आमिला की मीटिंग हर महीना होती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहरहाल हर तीन माह बाद किसी एक जगह पर मीटिंग हो जिसमें सारी आमिला के मेम्बरों, नायब सदरों और मुआविन सदर हाज़िर हों।

*एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि ख़ुद्दाम में जमाअत का इल्म कम है जिसकी वजह से वह तब्लीग़ नहीं कर सकते। ख़ुद्दाम को सिखाने का बेहतरीन हल किया है जिससे वे तब्लीग़ कर सकें? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इंटरनैट पर खलि़फ़ा की सवाल तथा जवाब की मज्लिसे बड़ी संख्या में मिल जाती हैं। इसी तरह कुछ मुरब्बियों और जमाअत के स्कालर्ज़ की सवाल तथा जवाब की मज्लिसे भी इंटरनैट पर उपलब्ध हैं। फिर यहां अमरीका में हमारे मुरब्बी भी इस बारे में काफ़ी काम कर रहे हैं और बाक़ायदगी के साथ सवाल तथा जवाब की मज्लिसों का आयोजन होता है और उनके बड़े अच्छे नतीजे ज़ाहिर हो रहे हैं। इसलिए आप अपने ख़ुद्दाम में इन मज्लिसों के द्वारा इलम में इज़ाफ़ा करने की रूह पैदा करें। सेक्रेटरी तब्लीग़ और सेक्रेटरी तरबियत को भी इस बारे में प्रोग्राम करने चाहिऐं। आप लोग अपने iPads और फ़ोनज़ के साथ हमेशा खेलते रहते हैं और उन पर दुनियावी चीज़ें देखते रहते हैं। आप इस काम के लिए भी कुछ ना कुछ वक़्त निर्धारित कर सकते हैं। एक दिन में कुल 24 घंटे होते हैं। इस में से छ: घंटे आप सोते हैं और बाक़ी आपके पास 18 घंटे बचते हैं। यूनीवर्सिटी, कालेजज़ और नौकरियों इत्यादि का वक़्त निकाल कर आपके पास फिर भी 2 से 3 घंटे बच जाते हैं जो आप प्राय इंटरनैट और टीवी प्रोग्रामों में नष्ट कर देते हैं। आपको वर्तमान समय की समस्यायों का भी इलम होना चाहिए और टीवी भी किसी हद देख लेना चाहिए , देश के सयासी हालात की भी ख़बर होनी चाहिए लेकिन इन सब चीज़ों के अतिरिक्त एक ख़ास वक़्त निर्धारित करें जिसमें अपने मज़हब के बारे में सीखें। आप लोगों को ख़ुद्दाम के अन्दर इस बारे में से शौक़ पैदा करना पड़ेगा। मवाद तो पहले ही मौजूद है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर आप समझते हैं कि कुछ ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब इंटरनैट पर मौजूद नहीं हैं तो फिर अपने मुरब्बियों से पूछें, वे जवाब दे देंगे। कुछ मतभेद वाले किस्म के सवाल होते हैं जिनके बारे में मुरब्बियों की भी विभिन्न राय होती है तो ऐसे सवाल वाले मुझे लिख दिया करें। मैं जवाब दे दूँगा। फिर हमारे स्कालर्ज़ सवालों के सार गर्भित और तफ़सीली जवाब दे सकते हैं जिन्हें आप सोशल मीडिया के द्वारा इंटरनैट पर भी डाल सकते हैं ताकि सारे ख़ुद्दाम इस से फ़ायदा उठा लें।

*मुहतमिम उमूर तुलबा ने निवेदन किया कि मेरा सवाल धार्मिक तथा मज़हबी मुबाहिसों के बारे में है। क्या हमें यूनीवर्सिटी इत्यादि में ऐसी debates का एहतिमाम करना चाहिए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप यूनीवर्सिटीज़ में सैमीनारों को आयोजित कर सकते हैं। दो किस्म के सैमीनार होते हैं। एक तो धार्मिक मज़ामीन के बारे में से होते हैं और दूसरे वर्तमान समय की कुछ समस्याओं के बारे में होते हैं। कुछ मज़हबी विषयों का भी च्यन किया जा सकता है। यू के और जर्मनी इत्यादि में जहां AMSA (अहमदिया मुस्लिम स्टूडैंटस एसोसीएशन) काम कर रही है वहां यूनीवर्सिटियों में सैमीनारों का आयोजन होता है। कई बार debates का भी आयोजन होताहै। मज़हबी उलूम का जो भी विभाग होताहै वह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 28 November 2019 Issue No. 48

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

यूनीवर्सिटी के हालों या auditoriums में इन सेमीनारों को आयोजित करने की इजाज़त दे देता है और बाहर के लोगों को भी उनमें बुलाया जा सकता है। अपने हालात के अनुसार आप ख़ुद देख सकते हैं कि क्या तरीक़ा धारण करना है। वर्तमान समय के समस्याएं हैं, मज़हबी इलम है या साईंस की रिसर्च पर आधारित कुछ धार्मिक विषय हैं जिन पर यह सैमीनार आयोजित किए जा सकते हैं। इस तरह आप दूसरे छात्रों को भी अपने क़रीब ला सकते हैं।अधिकतर छात्र academic से सम्बन्ध रखने वाले विषयों में दिलचस्पी का प्रकट करते हैं । तो जब यह छात्र आपके क़रीब आ जाऐं तो फिर आप मज़हबी विषयों पर भी सैमीनार कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर मशहूर विषय हस्ती बारी तआला है। फिर मज़हब की ज़रूरत, मज़हब की सच्चाई और इस तरह और कई विषय हैं जिन पर यह सैमिनार आयोजित किए जा सकते हैं। इस वक़्त में सारे विषय तो नहीं बता सकता लेकिन काफ़ी विषय हैं जिन पर सैमीनार रख सकते हैं। आप ख़ुद भी इस बारे में सोचें तो काफ़ी विषय सामने आ जाऐंगे।

*एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि हमने सवाल तथा जवाब पर आधारित एक किताब प्रकाशित की है जो ख़ुद्दाम में तक़सीम की गई है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: क्या आपने तरबियती बारे में भी मेरे उद्धरण या ख़ुत्बात को इकट्ठा करके कोई किताब तय्यार की है? इस बारे में दो किताबें हैं। एक का तो अंग्रेज़ी अनुवाद हो चुका है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: एक किताब सोशल मीडिया के बद असरात और उनसे कैसे बचा जा सकता है के बारे में है। किताब का टाइटल तो मुझे याद नहीं लेकिन सोशल मीडिया के बद असरात के बारे में है। यह 250 पृष्ठों की किताब है। इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद हो रहा है। जब यह तय्यार हो जाएगी तो आप यह किताब भी ख़ुद्दाम में तक़सीम कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस वक़्त जमाअत की दो बड़ी समस्याएं हैं। एक मसला जो कि हमारी नौजवान नस्ल को तबाह कर रहा है वह सोशल मीडिया का प्रयोग है और दूसरा घरेलू समस्याओं का मसला है। हमारी जमाअत में शादी के समस्याओं में इज़ाफ़ा हो रहा है। दूसरी किताब का विषय समस्याओं का हल है। इसका अनुवाद हो चुका है। मेरा ख़्याल है लजना इमाउल्लाह यू.के ने प्रकाशित की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लजना हर जगह ख़ुद्दामुल अहमिदया की निसबत ज़्यादा काम होते हैं। मैं हर जगह यह कहता हूँ लेकिन ख़ुद्दाम पर कोई असर नहीं होता। बल्कि मुझे यह कहना चाहिए कि यह सुनकर ख़ुद्दाम को शर्म आती।

एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि लजना के बारे में मैंने देखा है कि वे बहुत ज़्यादा Organised होती हैं। हर काम की तफ़सीली प्लैनिंग करती हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: असल बात आपकी तर्जीहात की है। अगर आप मज़हब को दुनिया पर तर्जीह देंगे तो आप बेहतर तौर पर काम कर पाऐंगे। आप ख़ुद्दामुल अहमिदया के अहद में धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने का वादा करते हैं । इसलिए अगर आप अपने धर्म को दूसरी चीज़ों पर फ़ौक़ियत नहीं देंगे तो आप धार्मिक कामों को करने में किस तरह organised हो सकते हैं। अगर लजना ज़्यादा Organised हैं तो मुझे बताने की बजाय आपको अफ़सोस का प्रकट करना चाहिए कि आप लोग Organised क्यों नहीं हैं। इसलिए आज वादा करें कि आप आगे से लजना की निसबत ज़्यादा organised होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब शादी ब्याह के समस्याएं के बारे में से मेरी किताब छपी थी तो ख़ुद्दामुल अहमिदया ने इस का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की इजाज़त तलब की थी। मैंने उन्हें इजाज़त दे दी लेकिन एक हफ़्ता बाद मुझे पता चला कि लजना आधी किताब का अनुवाद पूर्ण भी कर चुकी है। हरजगा यही हाल है। लेकिन यू.के में कम से कम ख़ुद्दामुल अहमिदया ने अब कोई ना कोई क़दम उठाने शुरू कर दिए हैं लेकिन यहां आप लोग सोचते ही रहते हैं कि हम कोई क़दम उठाईं लेकिन व्यवहारात्मक तौर पर कभी क़दम नहीं उठाते ।

एक आमिला के मैंबर ने निवेदन किया कि मैंने सुना है कि यूनीवर्सिटियों इत्यादि में दूसरे मज़हब के स्कालर्ज़ इत्यादि से debte नहीं करनी चाहिऐं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने तो ऐसा नहीं कहा। आप लोगों को मज़हबी मुबाहिसों से भागना नहीं चाहिए लेकिन मुबाहिसा शुरू होने से पहले कुछ शर्तें होनी चाहिऐं कि कोई दूसरे मज़हब के रहनुमा को गाली नहीं देगा। दूसरों

पृष्ठ 1 का शेष

है कि इस आख़िरी हालत में किस क़दर आराम होता है। अत: इस का अनुवाद यह है कि हे नफ़्स मुत्मइन्नह अल्लाह की तरफ़ चला आ। ज़ाहिर की दृष्टि से तो यह अर्थ है कि जान निकलने की अवस्था में अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आती है कि हे मुतमइन नफ़्स। अपने रब की तरफ़ चला आ। वह तुझ से ख़ुश है और तू उस से राज़ी। चूँकि क़ुरआन के लिए ज़ाहिर और बातिन दोनों हैं। इसलिए बातिन के लिहाज़ से यह अर्थ है कि हे इत्मीनान पर पहुंचे हुए नफ़्स अपने रब की तरफ़ चला आ। अर्थात तेरी कुदरती रूप से अवस्था हो चुकी है कि तो इत्मीनान और सन्तोष के स्थान पर पहुंच गया है और तुझ में और अल्लाह तआला में कोई दूरी नहीं है। लव्वामह की हालत में तो तकलीफ़ होती है मगर मुत्मइन्नह की अवस्था में ऐसा होता है कि जैसे पानी ऊपर से गिरता है। इसी तरह पर ख़ुदा तआला की मुहब्बत इन्सान के रग तथा रेशा में छा जाती है और वह ख़ुदा ही की मुहब्बत से जीता है। अल्लाह के ग़ैर मुहब्बत जो उस के लिए एक जलाने और जहन्नुम के पैदा करने वाली होती है। जल जाती है और इस की जगह एक रोशनी और नूर भर दिया जाता है। इस की रज़ा अल्लाह तआला की रज़ा और अल्लाह तआला की रज़ा उस की इच्छा हो जाती है। ख़ुदा तआला की मुहब्बत ऐसी हालत में इस के लिए बतौर जान होती है जिस तरह ज़िन्दगी के लिए ज़िन्दगी की चीज़ें ज़रूरी हैं इस की ज़िन्दगी के लिए ख़ुदा और सिर्फ ख़ुदा ही की ज़रूरत होती है। दूसरे शब्दों में इस का यह अर्थ है कि ख़ुदा तआला ही उस की सच्ची ख़ुशी और पूरी राहत होता है

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 93 से 96)

☆ ☆ ☆

को चाहिए कि वे अपने मज़हब की ख़ूबियां बयान करें। इस का उदाहरण हमें हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलता है। इस वक़्त एक मुबाहिसा हुआ जिस की बुनियादी शर्त थी कि मुबाहिसा में हिस्सा लेने वाला कोई भी दूसरे मज़हब की बुराई नहीं करेगा बल्कि सिर्फ अपने अपने मज़हब की ख़ूबियां बयान करेंगे। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी मुबाहिसा के लिए इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी तहरीर फ़रमाई थी। आप भी इस किस्म के मुबाहिसों में हिस्सा ले सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अख़तिलाफ़ी विषयों पर मुबाहिसा ना करें। आप लोग तो अपने भावनाओं पर क़ाबू पा लेते हैं लेकिन दूसरों के भावनाओं पर आपका कोई इख़्तियार नहीं होता। शुरू में तो वे वादा करते हैं कि वे ग़ुस्सा नहीं करेंगे और बद-कलामी नहीं करेंगे लेकिन कुछ ही देर बाद वे बहुत ग़ुस्सा में आ जाते हैं और फिर जो भी उनके मुँह में आता है बोल देते हैं। और कई बार बहुत गन्दी ज़बान प्रयोग करना शुरू कर देते हैं।

एक रीजनल क़ायद ने निवेदन किया कि जो ख़ुद्दाम active नहीं हैं उन के साथ सम्पर्क करने के बारे में से किस किस्म की approach होनी चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं पहले भी इस विषय पर कई बार बात कर चुका हूँ। इसका सब से बेहतर तरीक़ा यही है कि ओहदेदारों का ऐसे लोगों के साथ ज़ाती सम्पर्क होना चाहिए। आपको एक ऐसी टीम बनानी चाहिए जिनके ईमान मज़बूत हूँ और वे ऐसे लोगों के साथ दोस्तियाँ लगाऐं और उन्हें जमाअत के क़रीब करने की कोशिश करें। सबसे बेहतर तरीक़ ज़ाती सम्पर्क है और इस के लिए आपको शरीफ़ और अच्छे अख़लाक़ के मालिक ख़ुद्दाम की एक टीम बनाना पड़ेगी जिनकी उमरें 20 से 30 के बीच हो। या विभिन्न उम्रों के हिसाब से भी ग्रुप बना सकते हैं क्योंकि इस किस्म के समस्याएं हर उम्र के लोगों में नज़र आरहे हैं। इसलिए जो ख़ुद्दाम काम करने वाले नहीं हैं उनके हम उमर ख़ुद्दाम को टीम में रखें। लेकिन जिनको आप टीम में रखते हैं वे ख़ुद मज़बूत अहमदी होने चाहिऐं और उनके अपने ईमान मज़बूत होने चाहिऐं और उन्हें मज़हब का भी इल्म होना चाहिए।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया की यह मीटिंग 3 बजकर 45 मिनट पर ख़त्म हुई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा पढ़ाई।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad